DR. K.V.P. RAMACHANDRA RAO (Telangana): Sir, my humble submission is also the same.

MR. CHAIRMAN: Please. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAMOD TIWARI (Uttar Pradesh): Sir, my notice is there.

FAREWELL TO THE RETIRING MEMBERS

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, today, we bid farewell to some of our colleagues, who will be retiring in the months of June and July this year during the intervening period between the conclusion of this Session and the commencement of the next Session. 53 Members from the States of Andhra Pradesh, Telangana, Chhattisgarh, Madhya Pradesh, Tamil Nadu, Karnataka, Odisha, Maharashtra, Punjab, Rajasthan, Uttar Pradesh, Uttarakhand, Bihar and Jharkhand will be retiring on the 21st, 29th and 30th of June and the 1st, 4th and 7th of July, 2016, respectively, on the completion of their term of office.

Parting is painful, more when it involves a colleague and a friend, a member of the fraternity. The solace is that life and public life is a continuum and parting today will be a reunion tomorrow for some in the same surroundings. Every Member retiring has contributed significantly to the functioning of the House and in the process, to nurturing and strengthening our parliamentary democracy. You leave behind an indelible legacy that will continue to enrich the parliamentary proceedings in the future.

For those, who will come back, it will be more of the same. Excitability is a human trait. Tempering it with moderation, good sense and serious debate produces better results. This is the public's expectation from the senior House and this should be our endeavour. I wish all the retiring Members good health, happiness and a modicum of leisure and many more years of service to the nation.

Now, I would request the hon. Deputy Chairman to speak.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Hon. Chairman, Sir, I also join you in extending a very happy retirement life and greetings to the retiring Members. But, Sir, in common parlance, retirement means retiring from the official work, formal work and take rest. But for a politician, retirement does not means that. In fact, no politician retires. For the Rajya Sabha Members, retirement has a different connotation. Sir, as you have already said, some of them may be coming back to this House and some of them may be taking up better positions. Actually, retirement for the Rajya Sabha Members is only a change of position. Most of them may be becoming MLAs, MPs and again Ministers. Some of

them will come back. It is only a change of position. So, the retirement has a different connotation here. That is what I would say. I welcome your retirement because you will be in a better position. I know that some of you will come back. And we will gladly and happily welcome you.

I have no doubt, as you have already said, that all the Members have significantly contributed towards enriching the House. Their contribution has certainly been recorded in the indelible notes on the pages of our proceedings. And for that, I thank each one of them.

I would also say one more thing. Maybe out of my sincerity to run the House smoothly, I might have been harsh to some of them. But that I did only on the spur of the moment. I have very good feelings for each one of them. If anyone feels that I had been too harsh to them, he or she should condone that.

I sincerely hope they would get a better position hereafter. Retirement should not be a retirement for them, because no politician retires. A politician will be a politician physically and mentally till the last breath of his life. Therefore, you should all continue to be a politician. I wish you all the best. I will be very happy if all of you come back. But if you don't come back, you will be in a better position and you may lead a very happy life after going out of this House. Thank you very much.

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी): आदरणीय सभापति जी, राज्य सभा को एक विशेष लाभ है, जो लोक सभा को नहीं है और वह यह है कि हम ही हमारे बीच अपनों को विदाई भी दे पाते हैं और स्वागत भी कर पाते हैं। वह सौभाग्य लोक सभा को प्राप्त नहीं है। इस सदन की शुभकामनाएँ, यहाँ से निवृत्त होकर जाते हैं, उनको निवृत्त होने के लिए नहीं, अधिक प्रवृत्त होने की प्रेरणा देती हैं, ताकत देती हैं। मैं भी उन सब का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने गत 6 वर्ष दो सरकारों के साथ अपनी जिम्मेवारियाँ निभाईं, अपनी भूमिका अदा की और राष्ट्रहित के महत्वपूर्ण निर्णयों में उन्होंने अपने ज्ञान का, अनुभव का और क्षेत्र-विशेष की आवश्यकताओं का लाभ हम सब को पहुँचाया। आपके अनुभव का लाभ दोनों सरकारों को मिला है। इस सरकार को कम मिला, पुरानी वाली सरकार को ज्यादा मिला, लेकिन देश को पूर्ण रूप से आपका लाभ मिला है।

जब हम यहाँ आते हैं, तब हमारे अपने विचारों की एक सीमा रहती है। यहाँ देश के हर कोने से, हर प्रकार की पार्श्वभूमि के लोगों के साथ बैठने से, विचार-विमर्श करने से हमारा अपना भी सोचने का दायरा बहुत विशाल हो जाता है और एक प्रकार से सदन में आते समय हम जो थे, सदन से जाते समय हम बहुत कुछ और होते हैं और यह जो बहुत कुछ और होते हैं, वह राष्ट्र की, समाज की पूँजी बनता है। और मैं समझता हूं कि इस सदन ने हमें बड़ा बनाने में, हमारे ज्ञानवर्धन में, हमारे विज़न के विस्तार के लिए बहुत बड़ी अहम भूमिका निभाई है, हर साथी ने भूमिका निभाई है और उस महान संपुट को लेकर हम जा रहे हैं, तो जाने के बाद भी क्षेत्र विशेष के लिए, समस्या विशेष के लिए और राष्ट्र के लिए अपना

[श्री नरेन्द्र मोदी]

अनुभव काम आता रहेगा। मेरी आप सबको हमेशा-हमेशा बहुत शुभकामनाएँ रहती हैं और रहेंगी। सदन से जाने के बाद यह सरकार आपके लिए उसी प्रकार से काम करने के लिए तत्पर रहेगी जिस प्रकार से एक सदस्य के तौर पर आपका हक बनता है और इसलिए जाने के बाद भी जहां तक सरकार का मसला है, आपका वैसा ही हक बना रहेगा और मैं भी चाहूंगा कि आप इस हक का भरपूर लाभ उठाएं और समाज की सेवा में आपकी शक्ति, योगदान मिलता रहे।

कई महत्वपूर्ण निर्णयों में आपका योगदान रहा है। आप अब जब विदाई ले रहे हैं, उसी एक कालखंड का एक सत्र हम देखें, तो महत्वपूर्ण रिफॉर्म्स के निर्णय आपकी मौजूदगी में, आपकी पार्टनरशिप में, आपके इंटरवेंशंस से हुए, बड़े महत्वपूर्ण निर्णय हुए। लेकिन मुझे हमेशा, क्योंकि आप स्टेट को रिप्रेजेंट करते हैं, उस स्टेट के हित में वह आपकी प्राथमिकता रहनी भी चाहिए और रहती भी है, दो चीजों का गिला-शिकवा आपके मन में जरूर रहेगा, राज्य के रूप में जब देखें तो, अच्छा होता आपके रहते, आपकी मौजूदगी में दो ऐसे निर्णय होते, तो जिस राज्य को आप रिप्रेजेंट करते हैं, वह राज्य आपके प्रति हमेशा-हमेशा गर्व अनुभव करता। एक, जी0एस0टी0, ताकि जो बिहार से यहां आते हैं, जी0एस0टी0 से बिहार को भरपूर लाभ होने वाला था, यू0पी0 को भरपूर लाभ होने वाला था, एक या दो राज्यों को छोड़ करके सब राज्यों को भरपूर फायदा होने वाला था। इस सदन में आए हुए लोगों का यह दायित्व बनता था और अब आपको यह मौका नहीं मिला है। लेकिन आप में से जो वापस आएंगे, मुझे विश्वास है कि उनको यह अवसर मिलेगा और जिस राज्य से आएंगे उस राज्य की भलाई का एक महत्वपूर्ण काम आपके हाथों से होगा, जब वापस आएंगे। दूसरा महत्वपूर्ण काम, जो मैं मानता हूं वह है CAMPA का। अगर हमने इस बार उसका निर्णय किया होता तो CAMPA के तहत राज्यों को 42,000 करोड़ रुपए मिलने वाले थे और करीब-करीब एक-एक राज्य को दो हजार, तीन हजार करोड़ रुपए के आस-पास पैसे मिलने वाले थे। ये पैसे, दो हजार, तीन हजार करोड़ रुपया कम रकम नहीं होती है। यह फॉरेस्ट्री के लिए मिलने वाले थे और ये पैसे वर्षा के सीज़न में सर्वाधिक काम आ सकते थे। अच्छा निर्णय होना था, लेकिन शायद इस बार नहीं हो पाया। वर्षा का सीज़न चला जाएगा, चार-छः महीने और इंतजार करना पड़ेगा, लेकिन यह राज्यों की भलाई का सीधा-सीधा काम रह गया। मैं मानता हूं कि आप जहां भी होंगे आप शुभकामनाएं देते रहिए, प्रयास करते रहिए, ताकि राज्यों को जो लाभ पहुंचाने का काम यह सदन कर सकता है, वह शायद दूसरा सदन कम कर सकता है। मुझे विश्वास है कि अपकी शक्ति, आपका अनुभव इसलिए भी काम आएगा।

मैं फिर एक बार हृदय की गहराई से आप सब को, जो आज निवृत्त हो रहे हैं, अधिक प्रवृत्त होने के रास्ते पर जा रहे हैं, उनको बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं और आपके सहयोग के लिए सरकार की तरफ से आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं, धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Thank you, Pradhanmantriji. Now Shri Anand Sharma.

श्री आनन्द शर्मा (हिमाचल प्रदेश)ः माननीय सभापति महोदय, आज का दिन सदन के लिए, सब सदस्यों के लिए बड़ा भावुक दिन है, क्योंकि हम अपनी शुभकामनाएं और विदाई अपने उन साथियों को दे रहे हैं, जो अपनी 6 वर्ष की अवधि पूरी करके सदन से विदा हो रहे हैं। कई साथी हैं, कई नेता हैं, जिनका निश्चित है कि वे वापस आएंगे। उनका स्वागत करने का भी हमको अवसर मिलेगा। यह जीवन की एक वास्तविकता है, अस्थिरता ही स्थिरता है, कोई चीज़ स्थिर नहीं है, यह मनुष्य के

जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है और यही हम प्रकृति से पाते हैं, पर जहां तक सदन की बात है, संसद की बात है ...(**व्यवधान**)...

श्री के.सी. त्यागी (बिहार): शर्मा जी, यह farewell या हमारी condolence है?

श्री सभापति: त्यागी जी, कृपया आप बैठ जाइए।

श्री आनन्द शर्मा: सर, सदन और संसद स्थिर हैं, यह हमारे स्वतंत्रता सेनानियों की सबसे बड़ी देन है, संविधान निर्माताओं की देन है कि उन्होंने हमको संसदीय प्रजातंत्र दिया, संसदीय प्रणाली दी, जिससे पूरे देश के लोग, दूर-दराज के लोग, गांव के लोग, अलग-अलग राज्यों के लोग लाभान्वित हो रहे हैं। भारत एक ऐसा देश है, जिसकी शक्ति विविधता में एकता की है, यह एक बहुभाषी, बहुतधर्मी देश है। हमारा यह सदन उस विविधता को सही रूप से दर्शाता है और हमारे संविधान निर्माताओं की सोच को परिलक्षित करता है। इस सदन के अंदर ऐसे भी क्षण आए हैं, जब एक स्वर में पूरे सदन ने देश और दुनिया के घटनाक्रम पर अपनी चिंता व्यक्त की है, अपना मत रखा है। इस सदन ने वे भी क्षण देते हैं, वे दिन भी देखे हैं, जब तनाव रहा है और वह भी समझ में आता है, जब अलग-अलग विचार, अलग-अलग सोच और कई बार नीतियों और दिशाओं में टकराव दिखता है, पर इस सदन की सबसे बड़ी शक्ति यह रही है कि जब भी आवश्यकता हुई है, उसने ऊपर उठ कर देशहित की बात को समझा है, उसको किया है।

हमारे जो सदस्य जा रहे हैं, हर एक का अपना योगदान रहा है। कुछ ने चर्चा में, बहस में हिस्सा लिया है, कुछ ने प्रश्न उठाए हैं, कुछ ने ज़ीरो ऑवर में महत्वपूर्ण विषय उठाए हैं। जैसा कि उपसभापति महोदय ने कहा कि कुछ क्षण ऐसे भी आए, जब पीठ की तरफ से सख्ती भी हुई और जब पीठ की तरफ से चेयर देखेगी कि कई सदस्य अब नहीं हैं... पर मैं एक चीज़ कहना आवश्यक समझता हूँ कि जो एक तस्वीर बनाई जाती है, छवि बनाई जाती है कि सदन में काम नहीं होता, कई बार इस सदन के विषय में भी कहा जाता है, लेकिन इन सदन में जब भी चर्चा हुई है, तो उस चर्चा ने बहस के स्तर को उठाया है, इस सदन की गरिमा को ऊंचा उठाया है और अगर कभी गतिरोध हुआ है, वह भी कुछ कारणों से हुआ है। यह भी प्रजातंत्र का एक हिस्सा है। जहां हम अपने उन साथियों को विदाई देते हैं, जो जा रहे हैं, वहीं यह बात मान कर रखनी है कि राजनैतिक जीवन में जो लोग सदन में आते हैं, सांसद बनते हैं, वे सौभाग्यशाली होते हैं। उनकी एक पहचान बनती है। अभी माननीय प्रधान मंत्री जी सही कह रहे थे कि वे यहां से कुछ ग्रहण करके जाते हैं, कुछ सीख कर जाते हैं। उनका परिप्रेक्ष्य बदलता है, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य बनता है और यह हम सबके साथ होता है। हम सबने यहां पर आकर सीखा है। दूसरी तरफ जो सत्ता पक्ष है, वहां के साथी का भी जो परिप्रेक्ष्य था, जो सोच राज्य में थी, वह देश के स्तर पर आकर बदल जाती है। अगर आप राज्य में हैं, वहां पर आपकी सोच अलग है और जब आप देश के स्तर पर आते हैं, तब आपकी सोच बदल जाती है। इस तरफ रहें, तो सोच कभी अलग होती है और उस तरफ जाकर जिम्मेवारियां कंधों पर आती हैं, तो सोच बदलती है। यह एक किताब की तरह है, जिसके यहां से वहां जाने के बाद कुछ पन्ने बदल जाते हैं। हम इस चीज़ को अक्सर देखते हैं। यह सही बात है कि काफी काम हुआ है, जिस पर हमें यानी सब लोगों को सामूहिक रूप से गर्व है। जो इस सत्र में और पिछले सत्र में हुआ है, उसको हमें स्वीकार करना चाहिए। कई बड़े काम हुए हैं। जो सदस्य अपनी 6 वर्ष की अवधि पूरी करके जा रहे हैं, उन्होंने सत्ता परिवतन भी देखा है और उन्होंने यह भी

[श्री आनन्द शर्मा]

देखा कि कई ऐसे निर्णय हुए, कई ऐसे कानून बने, जो जरूरी थे, जो रुके रहे, वे पारित हुए। हम उन तमाम सदस्यों को बधाई देते हैं। इसी सदन ने बंगलादेश के साथ लैंड बाउंड्री एग्रीमेंट, जो वर्षों से रुका था, वह पास किया। इसी सदन ने इंश्योरेंस का बिल, जो सात वर्ष से रुका था, उसको पास किया। इसी सदन ने परसों इंसॉल्वेंसी और बैंकरप्सी का बिल पास किया। इस सदन का एक महत्वपूर्ण योगदान और रचनात्मक दृष्टिकोण हमेशा बना रहा है। ये कई कारण हैं।

माननीय प्रधान मंत्री जी ने कहा कि आज एक विशेष दिन है। यह सही है कि कुछ क़ानून लाने में देरी होती है, कुछ क़ानूनों पर चर्चा आवश्यक होती है और एक दृष्टिकोण एक दल का होता है और दूसरा दृष्टिकोण दूसरे दल का होता है, इसलिए आम सहमति के बाद ही कानून बनते हैं, वही देशहित में होते हैं। यह भी सही है कि देशहित समझना सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष दोनों के लिए जरूरी है। हमने भी अनुभव किया है, जब हम उस तरफ बैठे थे तो गतिरोध और आम सहमति न बनने के कारण, जिस जीएसटी का आपने जिक्र किया, वह वर्षों रुका रहा। हम सोचते हैं कि आज देश में एक ऐसा वातावरण बने, जिसमें राजनैतिक संवाद में जो कटुता आ गई है, उस कटुता को, उस कड़वेपन को दूर किया जाए, क्योंकि सब लोगों को मिलकर इस समाज और इस देश के निर्माण का काम करना है। हम सबका एक-दूसरे को समझने और एक-दूसरे से चर्चा करने का प्रयास रहे। भारत की संस्कृति महान है और वाद-विवाद, चर्चा-चिंतन हमारी संस्कृति का एक अंतरंग हिस्सा रहा है, इसलिए उसको हम उसी दृष्टिकोण से देखें। हम विरोधी विचार को भी स्वीकार करें, उनकी बात को सुनने और अपनी बात को समझाने की चेष्टा करें, ताकि इस देश के निर्माण के अंदर सब लोग भागीदार हों, जिससे हिन्दुस्तान का प्रजातंत्र मजबूत हो। राजनैतिक विरोधी, जिनकी विचारधारा अलग रहती है, उसको व्यक्तिगत विरोधी न समझकर, उनको एक दूसरी विचारधारा के पक्ष के लोगों के तौर पर देखते हुए, उसी तरह से उनसे व्यवहार हो। माननीय प्रधान मंत्री जी, इस पर देश के अंदर सहमति बनाने की विशेष जिम्मेवारी सत्ता पक्ष की रहती है, उसमें प्रतिपक्ष की भी विशेष भूमिका रहती है। हमारी ऐसी उम्मीद है कि कई सदस्य जो लौटकर आएंगे, जो काम पूरे नहीं हुए, उनको वे पूरा होते देखेंगे और जो नये सदस्य आएंगे, वे सब लोग देश में जो काम निरंतर होता रहा है, उसको वे मिलकर करेंगे।

हमारे जो साथी जा रहे हैं, उनको मैं अपने दल की तरफ से शुभकामनाएँ देता हूँ। हम एक चीज़ जरूर कहेंगे कि अक्सर जो समझा जाता है कि सब के सब लोग संपन्न-समृद्ध पृष्ठभूमि से आते हैं, वह जीवन की वास्तविकता नहीं है। यहाँ पर बहुत-से साथी हैं, जो संघर्ष के साथ यहाँ रहते हैं, बड़ी कठिनाई से अपने परिवारों का पालन-पोषण करते हैं, आलोचना भी सहते हैं, पर इसके बाद जब वे जाएँगे तो उनके संघर्ष का एक और दौर शुरू होगा, इस बात को भी समझते हुए हमें अपने ह्रदय से उन सबको शुभकामनाएँ देनी चाहिए, धन्यवाद।

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश)ः श्रीमन् यह सच है, जैसा आनन्द शर्मा जी ने कहा कि जब हम यहाँ मेम्बर्स को विदा करने के लिए खड़े होते हैं तो मन और दिल बहुत भारी होता है, क्योंकि हम जानते हैं कि कुछ लोग वापस आ जाते हैं और कुछ वापस नहीं भी आ पाते हैं। जो लोग रिटायर हो रहे हैं, उन्होंने इस सदन में चाहे वह क़ानून बनाने की प्रक्रिया हो, चाहे अन्य महत्वपूर्ण मामले उठाने की बात हो, कमोबेश सभी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

कुछ बहुत वरिष्ठ सदस्य भी रिटायर हो रहे हैं, मुझे उम्मीद है कि वे वापस आएँगे। शरद जी, सतीश जी तथा और लोग भी हैं, मुझे पूरी उम्मीद है कि ये वापस आएँगे। वे अपनी उपस्थिति से, हाउस में अपने क्रिया-कलापों से, हाउस का जो कार्य संचालन है, उसको और बेहतर बनाने में अपना योगदान करेंगे।

श्रीमन्, यह सही है कि राज्य सभा का वित्तीय क्षेत्र पर कोई अधिकार नहीं है, सरकार को बनाने और बिगाड़ने में कोई अधिकार नहीं है, लेकिन इस वजह से कई बार लोगों को यह गलतफहमी हो जाती है कि राज्य सभा एक कमजोर सदन है, यह दूसरा सदन न होकर दूसरे दर्जे का सदन है, ऐसा नहीं है। मुझे याद आता है, मैं एक बार पढ़ रहा था, जब अमेरिका का संविधान लागू हो गया था और जॉर्ज वाशिंगटन पहले प्रेसीडेंट बन गए थे, जेफरसन फ्रेंच रिवॉल्यूशन के वक्त फ्रांस चले गए थे, जब वे लौटकर आए, तो उन्होंने जॉर्ज वाशिंगटन से क्वेश्चन किया कि तुमने सीनेट को क्यों स्वीकार कर लिया? यह वहां का दूसरा सदन है। जब वे यह कह रहे थे, तो खड़े होकर चाय पी रहे थे। उस वक्त जेफरसन ने अपनी चाय कप से प्लेट में की और प्लेट से चाय को पीने लगे। इस पर जॉर्ज वाशिंगटन ने कहा कि आपने अपने सवाल का जवाब तो खुद ही दे दिया। उन्होंने कहा कि क्या मतलब? आपने यह चाय कप से प्लेट में क्यों डाली? उन्होंने कहा कि चाय को ठंडी करने के लिए, फिर वे बोले कि यही काम सीनेट करेगी और यही काम राज्य सभा करती है। लोक सभा तनाव में आकर, जल्दबाजी में आकर, अगर कोई फैसला करती है, तो उसको रोकने का काम, उसमें सुधार करने का काम राज्य सभा करती है, second chamber करता है। यह बहुत महत्वपूर्ण सदन है। यह आज से नहीं, दुनिया में इस तरह के जहां भी सदन हैं, उनका विधि निर्माण के क्षेत्र में और अन्य मामलों में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कई ऐसे विधेयक हैं, जो राज्य सभा में ही लाए गए, उसके बाद लोक सभा में गए और पारित हुए। यह एक महत्वपूर्ण सदन होने के नाते और सदन का मेम्बर होने के नाते, जब कोई यहां से रिटायर होकर जाता है, तो उसका दुख होना स्वाभाविक है। जब सदन चलता है, तो हमने एक-दूसरे को आपस में लड़ते हुए भी देखा है और यहां से निकल कर जैसे ही लॉबी में पहुंचते हैं, तो हंसने लगते हैं और सेंट्रल हॉल में जाकर साथ-साथ चाय पीते हैं, गप्प मारते हैं और फिर वापस आकर अपनी-अपनी बात, अपने-अपने कर्तव्य, अपने-अपने निर्णय के मुताबिक फैसले लेते हैं। कोई किसी तरह की दुश्मनी नहीं है, animosity नहीं है। यह न केवल हम सबको, बल्कि जो हमारे क्रिया-कलापों को बाहर देखता है, उन लोगों को भी सीख देता है कि अगर कोई बहस का मुद्दा है, तो उस पर बहस कीजिए और जब बहस खत्म हो जाए, तो उस चीज़ को दिल से निकला दीजिए और एक-दूसरे के साथ प्यार से रहने का काम कीजिए।

मैं एक बात और कहना चाहता हूं क्योंकि माननीय प्रधान मंत्री जी यहां पर बैठे हुए हैं। संसद को और राज्य सभा के लोगों को आम तौर पर इस बात की चिंता है कि जो हमारा अधिकार क्षेत्र है, उसमें हिन्दुस्तान की न्यायपालिका अनावश्यक हस्तक्षेप करती जा रही है और हमारे अधिकारों पर एनक्रोचमेंट कर रही है। इस पर आज नहीं तो कल, हमें नहीं तो आने वाले लोगों को सोचना पड़ेगा, क्योंकि सविधान ने संसद को विधि निर्माण का काम दिया है, कानून बनाने का काम दिया है, बजट बनाने का काम दिया है। हम कैसे बजट को बनाएंगे, कैसे मनी का एलोकेशन करेंगे, यह हमारा काम है। यह न्यायपालिका का काम नहीं है। अगर यह काम न्यायपालिका करने लगेगी, तो फिर संसद का

[प्रो. राम गोपाल यादव]

क्या मतलब रह जाएगा, क्या औचित्य रह जाएगा, इसलिए इस अवसर पर हमें यह भी गंभीरता से सोचना पड़ेगा। जब आगामी मानसून सत्र आएगा, तब इस पर सोचिए, लेकिन यह बहुत आवश्यक है किं ससद की गरिमा और संसद की शक्तियों पर किसी का, किसी बाहरी, किसी तीसरी ताकत की supremacy या उसका हस्तक्षेप लोगों को महसूस न हो। सब अपने-अपने क्षेत्रों में संप्रभु हैं, सबको अपना-अपना अधिकार प्राप्त है, संविधान में स्पष्ट line of demarcation खींच दी है। इसके बावजूद यह सब हो रहा है, यह चिंता की बात है। जो सदस्य रिटायर हो रहे हैं, मैं चाहता हूं कि उनका जीवन सुखी रहे। मेरी तो यही कामना है कि आज नहीं, तो कल वे फिर लौट कर आएं और अपनी पार्टी के लिए काम करें, समाज के लिए काम करें और देश के लिए काम करें, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री शरद यादव (बिहार)ः सभापति जी, आज का जो अवसर है, हमारे लिए तो बड़ी दुविधा हो गई कि इतनी बड़ी संख्या में विदाई हो रही है, इतनी बड़ी संख्या में लोग यहां से जा रहे हैं, इसमें हमारा नम्बर भी आ गया। हम इधर से बोलें या उधर से बोलें, समझ में नहीं आ रहा है कि क्या बोलें? राम गोपाल जी तो बड़े निश्चिंत थे। हमने इनसे पूछा कि बोलोगे, तो कहने लगे कि दो मिनट बोलेंगे। ये तो बड़े ही निश्चिंत तरीके से बोले। शायद इस गोल घर में जब कभी कोई पहुंच जाता है, तो मेरा यह अनुभव है... मैं तो उस गोलघर के आसपास 40-42 वर्षों से घूम रहा हूं, लेकिन मैंने यह देखा है कि जो साथी यहां से जा रहे हैं, उनके लिए इस समारोह का नाम 'विदाई समारोह' रखा गया है, तो विदाई तो बेटी की होती है, राजनीति में तो कभी विदाई होती ही नहीं है। यदि किसी को कोई विदा कर भी दे, तो जो इस सदन में या उस सदन में रहा है, वह यहां घूमता ही रहता है। सेन्ट्रल हॉल में उनके लिए एक कोना बना हुआ है। वहां एक ऐसा स्थान है, जहां यही लोग बैठते हैं।

यह जरूर है कि हमारी आज़ादी की उम्र बढ़ रही है और जो चुनौतियां हैं, हमें उनका समाधान करना चाहिए था, लेकिन लोग इस सदन में आते हैं और जाते हैं। यह तो एक बरगद है। जिस प्रकार बरगद मरता नहीं है, इसी तरह यह सदन निरंतर चलता रहता है, लेकिन एक बात जरूर है कि देश जहां पहुंचना चाहिए था, वहां नहीं पहुंचा। हम लोग यहां खड़े होते हैं, तो हमें लगता है कि हम 21वीं शताब्दी में खड़े हैं। हम जब देश में किसी कार्यक्रम में भाग लेने जाते हैं या किसी और काम से जाते हैं, तो हमें लगता है कि शताब्दी बदल रही है। यहां 21वीं शताब्दी है और यमुना पार चले जाएं, तो 20वीं शताब्दी शुरू हो जाएगी। यदि उससे भी आगे जाएंगे, तो 19वीं शताब्दी हो जाएगी।

हम सब लोग महापुरुषों को कई तरह से याद करते हैं। इस देश में महापुरुषों की बड़ी श्रृंखला है, लेकिन उन सबके सपने जमीन पर नहीं उतरे हैं। जो माननीय सदस्य यहां से जा रहे हैं और जो यहां बैठे हैं, विशेष तौर पर मेरे मन में तो नहीं है कि इस देश के जो हालात हैं.... कोई आदमी, कोई इंसान है, हम देखते हैं कि उसके साथ कदम-कदम पर जुल्म होता है, कदम-कदम पर अन्याय होता है। हिन्दुस्तान में यह आज़ादी जिन लोगों के लिए आई थी, आज यह आज़ादी उनके बाजू में नहीं खड़ी है, इसलिए जो सदस्य यहां से जा रहे हैं, मैं मानता हूं कि इस सदन से जाने के बाद उनको अजीब तरह से महसूस होता है। मैं बहुत से ऐसे साथियों को जानता हूँ, जो यहाँ से निकल गए और जिन्दगी भर वापस नहीं आए। राम गोपाल जी कह रहे थे कि इनकी इच्छा है कि बहुत से सदस्य यहाँ वापस आएँ, इसलिए मैं मानता हूँ कि कुछ लोग जरूर यहाँ आएँगे। हम तो एक तरह से कभी इस सदन से उस सदन में और कभी उस सदन से इस सदन में आते रहे हैं। उसका कारण यह है कि हमारे पास मकान नहीं हैं। जब

हमारे पास मकान नहीं हैं, तो हम क्या करें? जब हम वहाँ हार जाते हैं, तो यहाँ पहुँच जाते हैं और फिर कभी यहाँ से वहाँ पहुँच जाते हैं, जब वहाँ का चुनाव आ जाता है। इसलिए हम तो वर्षों से यहाँ हैं।

इस मौके पर मैं एक बात कहूँ। जो माननीय सदस्य जा रहे हैं, निश्चित तौर पर उनमें से कई ऐसे सदस्य हैं, जिन्होंने इस सदन में अपनी कूव्वत भर, अपनी क्षमता भर इस देश के लिए, इस सदन के लिए बहुत सी चीज़ें contribute की हैं। मैं मानता हूँ कि यहाँ से जाने वाले जो लोग हैं, उनके सामने चुनौतियाँ जैसी की तैसी हैं। हाँ, स्थिति बदल जाएगी, लेकिन यह तो जरूर है कि यहाँ से उनको एक यश मिल गया है। उस यश को जनता के हक में कैसे बदलें, यहाँ से जाने वाले हर सदस्य का यह काम है।

दूसरी बात मैं कहूँ कि पहले तो सदन में हम यहीं बोलते थे और यहीं बात समाप्त होती थी, लेकिन आजकल तो यहाँ visual media लगा हुआ है। एक और बात है। जो माननीय सदस्य जा रहे हैं, उनके लिए मैं एक बात और कहूँ कि एक पार्लियामेंट बाहर चल रही है, जो निरंतर चल रही है। जब हम यहाँ बोलते हैं, तो कई बार मुझे महसूस होता है कि यहाँ की बोली ज्यादा बाहर नहीं जाती है, लेकिन आप यहाँ से बाहर चले जाइए, तो मैं महसूस करता हूँ कि यह जो आजादी है, इसमें संतुलन होना चाहिए। यदि यह आजादी मर्यादा से बाहर हुई, तो यह आजादी, आजादी को खा जाएगी, यह आजादी, आजादी नहीं बनेगी। मैंने अटल जी के साथ कई बार इस पर बात की, हर प्रधान मंत्री के साथ बात की कि यह आजादी, आजादी को निपटा देगी। मेरा मतलब है कि खास कर जो मीडिया है, वह हमारी आजादी के बाजू में खड़ा होकर देश, दुनिया और सदन को ठीक से चलाने के लिए है, लेकिन मैं इतना जरूर कहना चाहता हूँ, राम गोपाल जी ने जो कहा, उस पर तो चर्चा हो, लेकिन यहाँ एक बड़ी चर्चा होनी चाहिए कि हमारी मर्यादा और हमारी आजादी क्या है। यानी हिन्दुस्तान में सिर्फ राजनीतिक लोगों के लिए accountability है, हम accountable हैं! हमें हिसाब भी देना है, फॉर्म भरना है, तब भी अपनी डिटेल देनी है। अपना सारा, मतलब हमारे सिर पर कितने बाल हैं, वे सब गिन कर देने हैं।

श्री आनन्द शर्मा: जिसके नहीं हैं, उसका क्या?

श्री शरद यादव: हाँ, वह भी देना है। कहने का मतलब है कि हमारे पीछे इतनी accountability है। इसके बाद लोग कह रहे हैं कि इनके खाने में गड़बड़ है। पता नहीं, क्या-क्या कहते रहते हैं! ठीक है, कोई बात नहीं, लेकिन दूसरों की भी कुछ तो accountability होगी या नहीं होगी? कहीं तो होगी कि नहीं? मीडिया में इस तरह की बातें होती रहती हैं। पत्रकारों के भीतर से खड़ा होकर कोई मीडिया नहीं चला रहा है। सबसे ज्यादा hire and fire यदि कहीं है, तो यह मीडिया में है। यहाँ हमें इसके बारे में सोचना चाहिए। इसके लिए कई कमिटियाँ बन चुकीं, लेकिन कभी कुछ नहीं हुआ। वहाँ मालिक ही एडिटर हो गया है और वह किसी भी दिन टोपी उछालने को तैयार है। अभी मैं यहाँ आ रहा था, तो एक आदमी मुझे यहाँ आने नहीं दे रहा था, वह मुझसे कुछ का कुछ पूछ रहा था। मान लीजिए कि वह महिला हो और यदि मैं जोर से कह दूँ कि अरे भाई, हट, तो वह कहेगी कि शरद यादव जी ये क्या कह रहे हैं? हम तो गाँव से हैं, हमारी भाषा ही ऐसी है, हम क्या करें? तो फिर वे गाली देने लगेंगे। वे गाली भी ऐसी देने लगेंगे कि कुछ पूछो मत। क्या करें? यानी राजनीतिक लोगों की सबसे ज्यादा आफत है।

[श्री शरद यादव]

खराबी यहाँ भी आई है। लोग कहते हैं कि सदन बंद होता है, ऐसा होता है, वैसा होता है। पहले पार्टियाँ कम थीं। जब हम सदन में आए थे, पाँचवीं लोक सभा में, तो पार्टियों की संख्या कम थी। उस समय कभी सदन बंद ही नहीं होता था। एक ही पार्टी का बड़ा भारी बहुमत था और ढिल्लों साहब हमारे स्पीकर थे, वे तो हमारी कभी सुनते ही नहीं थे।

इसलिए मैं यह कहना चाहता हूं कि बहुत से ऐसे सवाल हैं, जिन सवालों का समाधान करने के लिए जो मेम्बर्स यहाँ थे, वे कल भी उस काम में लगे रहेंगे। मेरी कामना है कि जितने सदस्य यहाँ से जा रहे हैं, वे फिर से यहाँ वापस आ जाएँ, तो ज्यादा अच्छा होगा। बहुत-बहुत शुक्रिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सुखेन्दु शेखर राय (पश्चिमी बंगाल)ः सभापति जी, मैं आज सुबह से मधुर संभाषण सुन रहा हूँ। मैं पाँच सालों से राज्य सभा में हूँ और मैं कई बार ऐसा देख चुका हूँ कि हमारे माननीय सदस्य, जो रिटायर होते हैं, उनमें से कुछ लोग तो वापस आते हैं, लेकिन ज्यादातर वापस नहीं आते हैं। जो माननीय सदस्य आज रिटायर हो रहे हैं, वे लगभग 53 सदस्य हैं। मैंने उन सबसे बहुत-कुछ सीखा है। हमारी राज्य सभा में उनका योगदान इतना महत्वपूर्ण था कि मैंने हर वक्त उनसे कुछ सीखा। मैंने यहां तक भी देखा कि इन लोगों ने कभी-कभी अपने दल और राजनीति से ऊपर उठकर देशहित में, जनहित में फैसले लिए और बहुत सारे बिल्स पारित कराने में अपना योगदान दिया। जब कांग्रेस की सरकार थी, उस समय भी योगदान दिया था, अब बीजेपी की सरकार है, अब भी योगदान दिया है। हम भगवान से यह प्रार्थना करते हैं कि ये अपनी बाकी ज़िंदगी अपने परिवार के साथ बिताएंगे और समाज के दूसरे कामों में लगे रहेंगे। मेरी और मेरी पार्टी की शुभकामना उनके साथ रहेगी कि ये अच्छी तरह से, इसी प्रकार चलते रहें। मैं अंत में मुकेश जी के एक पुराने गीत के मुखड़े की एक लाइन बोलना चाहता हूँ। यह बहुत ही पुरानी फिल्म, "बंबई का बाबू" का गाना है, जिसके हीरो, हीरोइन देव आनंद और सुचित्रा सेन थे। इसको मज़रूह सुल्तानपुरी जी ने लिखा था और सचिन देव बर्मन जी ने स्वरबद्ध किया था। वह गाना था।

"ओ जाने वाले, हो सके तो लौट के आना।"

मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि अगर हो सके, यदि उनकी पार्टी उनको पुनर्निर्वाचित करे, तो यह राज्य सभा के लिए फायदेमंद होगा, धन्यवाद।

सुश्री मायावती (उत्तर प्रदेश)ः माननीय सभापति जी, आज काफी बड़ी संख्या में इस सदन के माननीय सदस्य रिटायर हो रहे हैं। जो लोग रिटायर हो रहे हैं, वे स्वस्थ रहें। वैसे तो यह मालूम है, पूरा सदन इस बात से अवगत है कि जो लोग भी रिटायर हो रहे हैं, खास तौर से जिनको यहाँ पर, सदन में, नियुक्त किया जाता है या जो भी पार्टी उनको वहाँ चुनकर भेजती है अथवा नोमिनेट करती है, वह हर पार्टी, जिस पार्टी से भी लोग राज्य सभा के सदस्य बनते हैं, वह बहुत सोच-समझकर, सुलझे हुए लोगों को, बहुत ही अनुभवी लोगों को भेजती है। वे उनकी पार्टी के लिए कितने फायदेमंद हैं, उनकी मूवमेंट को आगे बढ़ाने में, उनके जनाधार को आगे बढ़ाने में कितने फायदेमंद होंगे, देश और जनहित के मामले में उनका कितना कंट्रीब्यूशन होगा, इन सारी बातों को ध्यान में रखकर ही हर एक पार्टी अपने लोगों को राज्य सभा में भेजती है।

आज जो लोग यहाँ से रिटायर होकर जा रहे हैं, वे बहुत ही सुलझे और अनुभवी लोग हैं। उनका विभिन्न क्षेत्रों में काफी योगदान रहा है। मेरा इस मौके पर यह कहना है कि जो लोग रिटायर होकर जा रहे हैं, उन्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम रिटायर हो रहे हैं, तो हमें घर जाकर बैठ जाना है। हर पार्टी बहुत सोच-समझकर उनको यहाँ, राज्य सभा में भेजती है, इसलिए उनकी यह नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि उन्होंने यहाँ से जो कुछ भी सीखा है, उस अनुभव को लेकर अपने क्षेत्र में काम करें और अपनी पार्टी को फायदा पहुँचाएँ। जब वे लोग जी-जान से लगे रहेंगे, तो मुझे पूरा भरोसा है कि उनके योगदान को देखकर, जिस पार्टी से भी वे लोग चुनकर आते हैं या उनको सेलेक्ट करके भेजा जाता है, वह उनको दोबारा जरूर भेजेगी। इसके साथ ही जो रिटायर होकर जा रहे हैं, मुझे इस बात का भरोसा है कि उनमें से काफी ऐसे वरिष्ठ लोग हैं, जिन्होंने देश और जनहित में अपने काफी अच्छे विचार रखे हैं। मैं समझती हूं कि उनसे सत्ता और विपक्ष, दोनों को बहुत कुछ सीखने के लिए मिला है और उनकी बातें हमारे लिए बहुत प्रेरणादायक भी होंगी।

इस मौके पर मेरा यही कहना है कि जो लोग रिटायर हो रहे हैं, उनको दुखी मन से नहीं जाना चाहिए, बल्कि यह सोचकर जाना चाहिए कि जिस पार्टी ने भी हमको यहाँ भेजा है, उसके कारण जो कुछ भी हमने यहाँ सीखा है, उसके बारे में क्षेत्र के लोगों को बताएंगे, अपनी पार्टी के जनाधार को तेजी से आगे बढ़ाएंगे और देश एवं जनहित के मुद्दों को लेकर आगे बढ़ेंगे। मैं समझती हूं कि यह ज्यादा बेहतर होगा कि जो कुछ वे यहाँ से सीख कर जा रहे हैं, उसको अपने क्षेत्र में जाकर लोगों को बताएं।

इस मौके पर ज्यादा कुछ न बोलते हुए, जो लोग भी रिटायर हो रहे हैं, उन्हें मैं अपने दल की ओर से शुभकामनाएँ देती हूँ और यह उम्मीद करती हूँ कि जो कुछ भी उन्होंने यहाँ से सीखा है, उसका फायदा अपनी पार्टी और अपने देश को पहुंचाएंगे। इसके अलावा मुझसे पूर्व कुछ माननीय सदस्यों ने खास तौर से ज्यूडिशियरी को लेकर भी कुछ बातें कहीं कि ज्यूडिशियरी के माध्यम से हमारी जो पार्लियामेंट है, खास तौर से उसमें दखल दिया जा रहा है। मैं समझती हूं कि इसमें कहीं न कहीं हमें अपने गिरेबान में झांक कर देखना होगा कि क्यों ज्यूडिशियरी इसका फायदा उठा रही है? अगर हम सत्ता और विपक्ष के लोग आपस में सही मायने में भारतीय संविधान और लोकतंत्र को ध्यान में रखकर नहीं चलेंगे और हर चीज़ के बीच में राजनीति को ले आएंगे, तो मैं समझती हूं कि फिर उसका फायदा माननीय न्यायपालिका उठाती रहेगी। ऐसी स्थिति में मेरा सत्ता पक्ष और विपक्ष, दोनों से यही कहना है कि माननीय न्यायपालिका इसका फायदा न उठाए, इसके लिए एकजुट होकर चलना चाहिए और कुछ मामलों में खास तौर पर हमें अपनी राजनीति को किनारे रखकर चलना चाहिए, तो ज्यादा ठीक रहेगा।

जहां तक जीएसटी की बात है, माननीय प्रधान मंत्री जी इधर नहीं हैं, उन्होंने कहा था कि जो जीएसटी वाला विधेयक है, वह पास हो जाना चाहिए था। पिछले सत्र में भी हमारी पार्टी ने कहा था कि आप इस विधेयक को लेकर आएं। मान लीजिए अगर उसमें कुछ कमियां हैं, तो उनके ऊपर चर्चा होनी चाहिए, जिसमें सभी दलों के नेता अपने-अपने सुझाव देंगे। मैं समझती हूं कि देश की अर्थव्यवस्था के लिए जो कुछ अच्छे सुझाव हैं, उनको हमारी सरकार को स्वीकार करना चाहिए। हमने कहा था कि आप इस विधेयक को लाएं। आप पिछली बार इसे नहीं ला पाए, ऐसे में अगर इस बार ले आते, तो

[सुश्री मायावती]

ज्यादा अच्छा होता। अगली बार जब सत्र शुरू होगा, तब इसको आप अवश्य लेकर आएं, हमारी पार्टी इसका पूरा समर्थन करेगी और हमारे जो कुछ भी सुझाव होंगे, वे सुझाव हम जरूर देंगे।

अंत में अपने दल और अपनी पार्टी की ओर से, जो भी माननीय सदस्य आज रिटायर हो रहे हैं, उन सभी को मैं हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ, धन्यवाद।

श्री दिलीप कुमार तिर्की (ओडिशा): धन्यवाद, सभापति महोदय, आज हमारे लिए काफी दुःख की घड़ी है, लेकिन हमारे संविधान या हमारी राज्य सभा का यही नियम या यही प्रथा है कि हरेक दो साल में हमारे एक-तिहाई मेम्बर्स रिटायर हो जाते हैं और आगे भी होते रहेंगे। आने वाले समय में हम भी रिटायर होंगे। आज हम सबके लिए यह बहुत emotional moment है।

जहाँ तक मेरा experience है, मैं हाउस में देखता रहता हूँ कि हमारे जितने भी मेम्बर्स हैं, वे सब अपने experience और अपने talent के ज़रिए एक दूसरे से लड़ते रहते हैं। पार्टियां एक दूसरे से लड़ती रहती हैं, लेकिन हम सब देश के भले के लिए लड़ते हैं और लड़ना भी चाहिए। हमारा जो मुद्दा है या जिन मुद्दों को उठा कर देश में डेवलपमेंट होता है, विकास होता है, हम उसके लिए लड़ते हैं। लड़ना चाहिए, तभी जाकर हमारा देश डेवलप होगा। दो दिन पहले यहाँ पर जो हमारा चौथा स्तम्भ है, प्रेस है, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया है, उसके बारे में चर्चा हो रही थी। उसका योगदान हमारे समाज के लिए, हमारे देश के लिए काफी अहमियत रखता है, वह काफी महत्वपूर्ण है, लेकिन उस दिन जो चर्चा हो रही थी कि आज-कल जो हम देख रहे हैं, जो पेड न्यूज़ या मैच फिक्सिंग की बात है, तो हमारे देश का जो सिस्टम है या हमारा जो डेवलपमेंट है, वह इसे खोखला कर देगा। तो उस दिन भी बात हो रही थी कि इस बारे में चर्चा होनी चाहिए, मैं इस बात को यहाँ रखता हूँ। लेकिन आज जो फेयरवैल का दिन है। मैं इतना ही कहूँगा कि हमारे जितने भी सीनियर मेम्बर्स यहाँ से रिटायर हो रहे हैं, आप लोगों का योगदान काफी हमारी संसद के माध्यम से देश के लिए, समाज के लिए, गरीब लोगों के लिए, आदिवासी लोगों के लिए, काफी अच्छा रहा है। आपसे मुझे भी काफी सीखने को मिला है और आगे भी मैं यही उम्मीद करता हूँ कि आप देश के लिए इसी स्पीड से योगदान देंगे। हमारे ओडिशा के भी तीन मेम्बर्स इस साल रिटायर हो रहे हैं। सबको हमारी पार्टी की ओर से मैं शुभकामनाएँ देता हूँ, धन्यवाद।

श्री सुखदेव सिंह ढिंढ़सा (पंजाब): सर, वैसे तो शरद जी ने कहा कि विदाई नहीं कहना चाहिए, लेकिन मेरे पहले सीनियर लोगों ने बोला कि हमारी दुआ है कि वे फिर वापस आ जाएँ। हम यहाँ कई अनुभवी लोगों से मिले, उन सभी के साथ बैठे और कइयों के विचार यहाँ पर सुने। इस देश में जितनी स्टेट्स हैं, इनका कल्चर, इनकी लैंग्वेज़, इनकी डिफिकल्टीज़, डिफरेंट-डिफरेंट है। यह कुदरती है कि जब हम उनको मिलते हैं, या यहां पर इनके विचार सुनते हैं, तो उस सूबे की, उस स्टेट की क्या समस्याएं है, उसका क्या कल्चर है, उसका क्या कहना है, वह एक-दूसरे से मिलने के बाद या यहाँ पर डिस्कशन में मालूम होता है। तो कुदरती है कि जब हमारे वे साथी जाते हैं, तो दिल में आता है कि जो अच्छे इंसान हैं, वे हमारी दुआ से वे वापस आएँ।

सर, मैं दो-तीन बातें जरूर कहूँगा। हमारे डेमोक्रेटिक सिस्टम में यह है कि डिस्कस, डिबेट एंड डिसाइड। लेकिन जब यहाँ पर लोग वैल में आते हैं, मैं किसी खास पार्टी को नहीं कहता, तो जब लोग आते हैं, तो हम जो छोटी पार्टीज़ हैं, रीज़नल पार्टीज़ हैं, उनकी जो समस्याएं हैं, वे खत्म हो जाती हैं, कोई सुनता ही नहीं है, उसे हम यहाँ पर रिकॉर्ड नहीं करा सकते, कुछ नहीं हो सकता। मैं यह किसी

एक के लिए यह नहीं कहता, सभी पार्टीज़ के लिए कहता हूँ। हमारी पार्टी भी कभी आई होगी, इसलिए यह मैं नहीं कहता, लेकिन डेमोक्रेटिक सिस्टम में ऐसा होना चाहिए कि डिबेट होनी चाहिए, डिस्कस होना चाहिए और उसके बाद डिसीज़न होना चाहिए। हम कम से कम इस हाउस को जो 'एल्डर्स हाउस' भी कहते हैं, तो हमारे इस हाउस में हम कोई ऐसी परम्परा जरूर डालें, जिससे लोग कहें कि हाँ, वह वाकई 'एल्डर्स हाउस' है या ऐसे लोग यहाँ हैं। यहाँ पर जो लोग आते हैं, इनका अनुभव इसलिए ज्यादा होता है, क्योंकि कोई असेम्बली से आता है, कोई लोक सभा से आता है, तो कोई किसी न किसी और क्षेत्र से आता है। यहाँ से जो लोग जाएँगे, उनमें से बहुत से यहाँ वापस भी आएँगे, लेकिन जो नहीं भी आएँगे, तो भी कहीं न कहीं उनमें से कोई लोक सभा में, असेम्बली में या और कहीं अपनी पार्टी में इम्पॉर्टेंट पोस्ट पर जाएगा। उनको हम सभी की शुभकामनाएँ हैं।

एक बात राम गोपाल जी ने भी कही और बहन मायावती जी ने भी कही कि हम ज्यूडिशियल सिस्टम के बारे में यहाँ पर रोज डिस्कस करते हैं। प्रधान मंत्री जी तो अब चले गए हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि सरकार को या सभी पार्टीज़ को मिल कर दो दिन, तीन दिन या एक हफ्ते का एक स्पेशल सेशन ज्यूडिशियल रिफॉर्म्स के लिए बुलाना चाहिए। हम हर रोज यहाँ पर डिस्कस करते हैं, लेकिन ज्यूडिशियल रिफॉर्म्स नहीं होते, तो उस पर डिस्कशन के लिए एक हफ्ते का एक स्पेशल सेशन हो, जिसमें क्वेश्चन ऑवर न हो, कोई और चीज़ न हो, कुछ भी न हो, सिर्फ यही डिस्कस करके इसमें डिसाइड होना चाहिए, क्योंकि हर रोज हम यहाँ पर डिस्कस करते हैं और हर रोज ज्यूडिशयरी उससे भी ऊपर जाती है। जब हम उनको क्रिटिसाइज़ करते हैं, तो उनको और ज्यादा खराब लगता है। उसमें रिफॉर्म्स की जरूरत है। सरकार से और सभी पार्टीज़ से मेरी रिक्वेस्ट है कि हमें सबको मिल कर ज्यूडिशियल रिफॉर्म्स भी करने चाहिए। तो मैं भी अपनी पार्टी की तरफ से, शिरोमणि अकाली दल की तरफ से जो हमारे ऑनरेबल मेम्बर्स जा रहे हैं, जो वापस आएंगे और जो नहीं भी आएंगे, उनको शुभकामनाएँ देता हूं, धन्यवाद।

SHRI TAPAN KUMAR SEN (West Bengal): Sir, at the outset, on behalf of my party as well as on my personal behalf, I express a feeling that we will be missing some of our colleagues here, from the next session onwards. We also expect and hope that many of them will again come back to this House.

Secondly, during the period we worked together, we had a very rich experience of learning, both individually and collectively. That is the beauty of this House. Issues will come and issues will go. But everybody has to clinch in time. If it is not clinched at the desired time, I don't think heaven will fall. There are numbers which will finally decide in the democracy. But before exercising that authority of number, we must go to the detail to ensure consensus. And, I think, in this session itself, we passed a Bill yesterday, where all the avenues were exploited to reach a consensus. And, the consensus was reached and the issue was clinched. So, this is the experience we have had, at least, during my last ten years' period in the Rajya Sabha. We learn everyday, which includes expression of differences. It includes even quarrels. But by the end, when we go to the Central Hall

[Shri Tapan Kumar Sen]

12.00 Noon

together, all of us would be sharing a cup of tea or a smoke, who smoke. It never went to the personal level. That is the beauty. That is the experience we have had. Fifty-three of my friends would be retiring today. So, without elongating, I again wish from the core of my heart that many of them must come back. But all of them will continue to remain active in their public life, in their collective life, in their political life. They should continue to remain healthy and active. Thank you very much.

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, I have a longish list of retiring Members who wish to speak. We also have a certain time constraint. My plea to the retiring Members would be to confine their remarks to a couple of minutes or so.

SHRI V. HANUMANTHA RAO (Telangana): Five minutes, Sir.

MR. CHAIRMAN: No, we cannot do it. I am sorry.

श्री शरद यादवः अगर आज शाम भी ढल जाए और जो लोग जा रहे हैं, तो उनका गुबार निकल जाए, तो क्या हर्ज है? उनको समय दीजिए। यदि आपका कोई एंगेजमेंट है, तो फिर कोई बात नहीं।

श्री सभापतिः मेरा तो यही एंगेजमेंट है।

श्री शरद यादवः लोगों को पांच-पांच मिनट तो दे ही दीजिए।

श्री सभापतिः जोश मलीहाबादी की एक नज़म है, "चले जाओगे बे गले से लगाए..... श्री विशम्भर प्रसाद निषाद, Please try to be as ...*(Interruptions)*... No, five minutes are too much. ...*(Interruptions)*...

श्री विशम्भर प्रसाद निषादः माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे मेरा कार्यकाल पूरा होने के मौके पर बोलने का अवसर दिया, मैं आपको, माननीय उपसभापति जी को और अपने सभी जितने अधिकारी और कर्मचारी यहां रहे हैं, उनको धन्यवाद देता हूं जिन्होंने हमारे दो साल के कार्यकाल में अपना सहयोग दिया है। मैंने अपनी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष, माननीय मुलायम सिंह यादव जी, माननीय प्रो0 राम गोपाल यादव जी और अपने नेता आदरणीय नरेश अग्रवाल जी से बहुत सीखा और मैं उनको धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने हमें यहां आने का मौका दिया और समय-समय पर हमारे समाजवादी पार्टी के जो सहयोगी साथी हैं, उन लोगों ने हमारा पूरा हौसला बढ़ाने का काम किया है। महोदय, मैं तो एक छोटे परिवार से आता हूँ। मैं तो सोचता था कि राज्य सभा में बड़े-बड़े लोग जाते हैं, नाव चलाने वाले, मछली मारने वाले को कौन पूछने वाला है, लेकिन मैं इसके लिए माननीय मुलायम सिंह यादव जी को बधाई देता हूँ कि उन्होंने मुझे राज्य सभा में भेजा। जब 2014 का लोक सभा का चुनाव हुआ, पूरे देश में बहुत सारे नेता हारे, उत्तर प्रदेश में भी समाजवादी पार्टी के बहुत से हमारे साथी हारे थे, मैं भी हमीदपुर लोक सभा सीट से चुनाव लड़ा था, लेकिन उस समय हमारे पार्टी के तमाम बड़े-बड़े नेता थे, लेकिन माननीय नेता जी ने, माननीय प्रोफेसर साहब ने, माननीय मुख्य मंत्री जी ने हमारा नाम भेजा। मुझे तो पता भी नहीं था, जब मैंने टीवी में देखा कि मुझे राज्य सभा का सांसद बनाया गया, तो मेरे आंसू आ गए। मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं भी राज्य सभा में आ सकता हूँ।

महोदय, मैं विधान सभा में चार बार विधायक भी रहा हूँ, 1991 और 1993 में माननीय नेता जी के साथ मंत्री भी रहा हूँ। मैं एक बार लोक सभा का भी मेम्बर रह चुका हूँ। चूंकि आपने समय बाँध दिया है, इसलिए मैं अपने दल के नेताओं का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने हमें मौका दिया। मैंने 7 जुलाई को शपथ ली थी और आज 13 मई है और आज हम लोगों का विदाई का दिन है, लेकिन मैं सदन से विनती करना चाहता हूँ, खास तौर से केन्द्र सरकार से अनुरोध करना चाहता हूँ कि पूरा देश उनसे उम्मीद लगाए हुए है। जिस तरह से चुनाव में लोगों से वादा किया गया, आज देश में भुखमरी है, गरीबी है, बेरोजगारी है और खास तौर पर बुन्देलखंड में स्थिति बहुत खराब है। हम तो एक छोटे से परिवार से आए हैं। जब हम छोटे थे, तब खाने की समस्या थी, हमें खाने के लिए गेहूं की रोटी नहीं मिला करती थी, बल्कि मोटे अनाज यानी चना, बाजरे आदि की रोटी मिला करती थी। जब कोई मेहमान आ जाते थे, तब छोटे बच्चों को गेहूं की रोटी मिला करती थी। आज हम लोग खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हो चुके हैं, लेकिन आज भी लोगों के पास रहने के लिए मकान नहीं हैं, नौजवानों और बेरोजगारों के लिए रोजगार नहीं हैं, खास तौर से हमारे बुन्देलखंड में इस तरह की तमाम समस्याएं हैं। चूंकि हमारे बुन्देलखंड की खेती वर्षा पर आधारित है, इसलिए इस तरह की दिक्कत है। वहां पर इस समय सूखा पड़ा हुआ है, अकाल पड़ा हुआ है। हमारे माननीय मुख्य मंत्री, अखिलेश यादव जी वहां बहुत काम कर रहे हैं। वे गरीबों के लिए काम कर रहे हैं, खाने का इंतजाम कर रहे हैं, पानी का इंतजाम कर रहे हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि माननीय मुख्य मंत्री जी ने केन्द्र सरकार से जो मांगा है, उनको वह देना चाहिए। केन्द्र सरकार को पूरी मदद करनी चाहिए, क्योंकि बुंदेलखंड आस लगाए बैठा हुआ है।

माननीय सभापति महोदय, अंत में मैं अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष, माननीय मुलायम सिंह यादव जी, अपने नेता, प्रोफेसर राम गोपाल यादव जी का आभार व्यक्त करता हूँ। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः थैंक यू, आपके तीन मिनट पूरे हो गए।

श्री विशम्भर प्रसाद निषादः मैं समाजवादी पार्टी के उन सभी सदस्यों को भी बधाई देता हूँ, जो हमारे साथ रिटायर हो रहे हैं। मैं उन सबको बधाई देते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ। जय हिन्द!

DR. CHANDAN MITRA (Madhya Pradesh): Mr. Chairman, Sir, and all hon. Members here, I begin with a heavy heart and also a great deal of joy, joy because I believe that I have been able, along with all my colleagues here, to contribute something to the national discourse, and, the heart, of course, is heavy because after 10 years or a little more, in fact, I will no longer be entering the House, and, to that extent, it is sad to leave. Sir, the hon. Prime Minister himself and other senior Leaders have already expressed many of the things that I would have liked to say. So, I will confine myself to just leaving one thought behind. That thought is that how does the Rajya Sabha differentiate itself from the Lok Sabha. Of course, everything is defined. We know that we have no control over money; we know that there are various things in which the Lok Sabha has the bigger say, but, I think, the Rajya Sabha, as the repository of wisdom, Sir, can act as a repository of wisdom! We can be "the intellectual fountainhead" and something that

[Dr. Chandan Mitra]

shows the way to the Lok Sabha, to the States and to the Government as to how we should go about. Therefore, Sir, my request, through you, to all the Members who will stay on and those who will come back is that, maybe, there should be some scope for debating and discussing policy issues. For instance, why couldn't we have a debate on the meaning of 'nationalism', nationalism in India today? Why don't we have this? Why don't we have more debates on issues like 'Wildlife' and 'Environment'? I was really pleased to hear the Prime Minister referring to the CAMPA Bill which could not be concluded yesterday. I wish it had been. But I know that Mr. Jairam Ramesh, my good friend, has assured that on the first day of the next Session, this will be done. I won't be here. But I do hope that this ...*(Interruptions)*... But I am sure we have worthy successors who will take it forward and get it done. Mr. Ramesh, I will leave it to you to convince your colleagues and compatriots. I will do my best. We have brought the Bill. So, you can be rest assured that the Government side is fully committed to it.

MR. CHAIRMAN: Thank you.

DR. CHANDAN MITRA: One moment. I am concluding, Sir. But I will, as is my usual style, conclude with a poem. This is in the context of what I learnt all these years. In 2003, Sir, I entered the hallowed portals of the Rajya Sabha and now I am leaving. There was a gap in between. But, basically, from 2003 to now I have been here. I have learnt a lot, and I can best express my learning in the words of Faiz Ahmed Faiz whose two stanzas, I take your leave to kindly read out. इस सदन में मेरे जो ये 12 साल गुजरे, उस दौरान मैंने क्या सीखा, इसका बयां मैं फैज़ साहब की कलम के जरिए करना चाहता हूँः

"आजिज़ी सीखी गरीबों की हिमायत सीखी,
यास ओ हिर्मां के दुःख-दर्द के मश्आनि सीखे,
ज़ेर दस्तों के मसाएब को समझना सीखा,
सर्द आहों के रुखे ज़र्द के मश्आनी सीखे।

जब कहीं बैठ के रोते हैं वह बेकस जिनके,
अश्क आँखों में बिलखते हुए सो जाते हैं,
नातवानों के निवालों पे झपटते हैं उक़ाब,
बाज़ू तौले हुए मन्डलाते हुए आते हैं।

जब कभी बिकता है बाज़ार में मज़दूर का गोश्त,
शाहराहों पे गरीबों का लहू बहता है,
आग सी सीने में रह-रह के उबलती है, न पूछ,
अपने दिल पर मुझे क़ाबू ही नहीं रहता है।"

Sir, this is what I learnt. So, in conclusion, Sir, I want to wish everybody well. I just conclude with the following words:

"तुमको भी है खबर, मुझको भी है पता,
हो रहा है जुदा दोनों का रास्ता,
दूर जाके भी मुझसे तुम, मेरी यादों में रहना,
कभी अलविदा न कहना, कभी अलविदा न कहना।"

मैं यह कह सकता हूँ कि मेरी यादों में तो आप हमेशा रहेंगे, मैं अगर आपकी यादों में एक छोटी सी भी जगह बना सकूँ, तो मैं अपने आपको खुशनसीब समझूँगा।

MR. CHAIRMAN: Thank you Dr. Chandan Mitra. Shrimati Kanak Lata Singh.

श्रीमती कनक लता सिंह (उत्तर प्रदेश)ः आदरणीय सभापति जी, आज मैं किन शब्दों में अपना आभार प्रकट करूँ कि आज आपने मुझे दो मिनट का समय अपनी बात रखने के लिए दिया है। जैसा कि सदन के सभी सदस्यों को पता है कि मैं समाजवादी नेता, मोहन सिंह जी की बेटी हूँ। मेरे पिता के नहीं रहने के बाद आदरणीय नेता जी ने मुझे राज्य सभा में भेजा, यह मेरे लिए बहुत बड़ी बात थी। मैं यह कहना चाहती हूँ कि हमारी पार्टी के मुखिया देश में ऐसे अकेले नेता हैं, जो अपने साथियों के नहीं रहने के बाद भी उनके परिवार का, उनके बच्चों का और अपने कार्यकर्ताओं का बोझ भी अपने कंधों पर उठा लेते हैं।

मैं जब इस सदन में शपथ लेने आई, तो मैं अपनी पार्टी के नेता आदरणीय प्रोफेसर साहब के पास गई। तब इन्होंने एक गार्जियन की तरह मुझे बताया कि इस सदन में कैसे शपथ लेनी है और शपथ लेने के बाद टेबल की तरफ से कैसे यहाँ आना है। ये सब इन्होंने सिखाया और तब से लेकर आज तक एक गार्जियन की तरह ही इनका स्नेह मुझे मिला है। हमारी पार्टी के नेता आदरणीय नरेश जी और हमारी पार्टी के सभी सदस्यों का बहुत ही स्नेह और आर्शीवाद मिला। मैं आज अपनी आदरणीया जया बच्चन जी के लिए यही कहना चाहती हूं कि मेरी सीट वहां पर थी और आपने मुझे अपने पास बैठाया। हमेशा एक बड़े की तरह स्नेह, आशीर्वाद दिया और सिखाया। इस सदन में, चाहे पक्ष हो, विपक्ष हो, सभी सदस्यों ने स्नेह और आशीर्वाद मुझको दिया। मुझे इस बात की बहुत खुशी हुई कि इस सदन के सभी सदस्यों को जब यह बात पता लगी कि मैं उनके साथी की बेटी हूं, तो मेरे पिता के प्रति आप सभी के मन में बहुत आदर और स्नेह था।

सभापति जी, मैं आपका भी आभार प्रकट करना चाहती हूं कि जब मैंने एक किताब अपने पिता की निकाली, तो मैं आपके पास गई और आपने जो संदेश दिया, उस संदेश को पढ़ने के बाद मुझे यह अहसास हुआ कि कितना स्नेह आप मेरे पिता से करते हैं। मैं आज अपने उपसभापति जी का भी आभार प्रकट करती हूं कि प्राइवेट मेम्बर्स बिल के दिन, जिस दिन मैंने पूर्वांचल को रेल लाइन से जोड़ने के लिए स्पीच दी, तो आपने कहा कि मैंने बहुत अच्छा बोला। 'बहुत अच्छा बोला', ऐसा कह कर आपने मेरे मनोबल को बढ़ाया। इससे हम सब नये मेम्बर्स का मनोबल बढ़ता है, इसलिए मैं आपका आभार प्रकट करती हूं।

सभापति जी, यह बात सही है कि मेरे पिता पूरे जीवन मेहनत, ईमानदारी और पूरी पारदर्शिता के साथ देश की सेवा करते रहे। बहुत बार इस सदन में आदरणीय के.सी. त्यागी जी इमरजेंसी की बात करते रहे, लेकिन मैं आज यह कहना चाहती हूं कि अगर इमरजेंसी का वर्णन मैं करूं, तो आप लोग

[श्रीमती कनक लता सिंह]

सुन नहीं पाएंगे। मैं अपने पिता के नहीं रहने के बाद सक्रिय राजनीति में आई और जब मैं सक्रिय राजनीति में आई और राजनीति को सही रूप में मैंने देखा और समझा, तो मुझे राजनीति की सही परिभाषा जो समझ में आयी, वह सेवा है। जब तक मेरे मन में सेवा का भाव नहीं होगा, तब तक मेरे मन में करुणा की भावना नहीं होगी, जब तक हम आम आदमी की समस्याओं को अच्छी तरह से समझेंगे नहीं, तब तक हम अपने काम के प्रति न्याय नहीं कर पाएंगे।

सभापति जी, मैं कहना चाहती हूं कि मेरा ढाई साल का कार्यकाल था। मैं एक भी दिन हाउस से अनुपस्थित नहीं रही। एक दिन सिर्फ मैं जब अपने क्षेत्र में गई, तो वहां हमारे प्रत्याशी का चुनाव था, मुझे उसमें वोट डालने जाना था और वह मेरी जिम्मेदारी थी, इसलिए मैं सिर्फ एक दिन इस सदन से absent रही। लेकिन मुझे बड़ा दुख हुआ, मैं अपना अनुभव आपको बताना चाहती हूं कि जब भी मैं आती थी, चाहे कोई परिस्थिति हो, यह सदन चलता नहीं था। मेरे पिता को जब "सर्वश्रेष्ठ सांसद पुरस्कार" मिला, तो उन्होंने यह कहा कि जीरो ऑवर और क्वेश्चन ऑवर जरूर चलना चाहिए। हम लोग नये मेम्बर्स बहुत तैयारी से आते थे, लेकिन जब हम लोगों को क्वेश्चन ऑवर, जीरो ऑवर में कुछ नहीं लगता था, तो बहुत मायूस होते थे।

श्री सभापतिः थैंक्यू।

श्रीमती कनक लता सिंहः सभापति जी, मुझे एक-दो मिनट का और समय दे दीजिए। जब मैं हाउस में आई, तो एक प्राइवेट मेम्बर बिल था और हमारे सदन के सदस्य यही कहते रहे कि ढाई बजे से प्राइवेट मेम्बर्स शुरू होगा, जल्दी करो और यह करते-करते चार बज गए और सदन स्थगित हो गया। मैंने देखा कि पूरे 20 दिन सदन नहीं चला और किशोर न्याय बिल चार घंटे में पास हुआ। सभापति जी, बच्चों की बड़ी समस्याएं हैं। सभी ने निर्भया की बात कही, लेकिन मुझे लगा कि किसी ने यह नहीं कहा कि उस बच्चे ने अपराध कैसे किया? उस बच्चे ने अपराध नशे में किया था, इसलिए मैं कहना चाहती हूं कि डिबेट भी होनी चाहिए। आज मैं आपसे अनुरोध करके अपने दो प्रस्ताव रखकर जाना चाहती हूं और मैं यह जिम्मेदारी आपको देना चाहती हूं। पूर्वांचल में मस्तिष्क ज्वर एक बड़ी समस्या है। जब मैं शपथ लेकर पूर्वांचल में गई, तो हमारे सभी पत्रकार साथियों ने मुझसे कहा कि आप पूर्वांचल के लिए क्या करना चाहती हैं? मैं मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर गई और जो मैंने वहां पर दृश्य देखा, उसको मैं इस सदन में बताना चाहती हूं। मैंने देखा कि एक तीन साल का बच्चा खत्म हो गया था।

श्री सभापतिः आप समाप्त करें।

श्रीमती कनक लता सिंहः नहीं, नहीं। सभापति जी।

श्री सभापतिः आपको जाना है, आपका जहाज छूट जाएगा।

श्रीमती कनक लता सिंहः मैंने देखा कि एक तीन साल के बच्चे को डॉक्टर्स पम्प दे रहे थे। जब मैं बाहर निकली, तो उसकी मां जोर-जोर से रो रही थी और यह कह रही थी कि मेरे बच्चे को बचा लीजिए। मैं यहां अपने दो प्रस्ताव रखना चाहूंगी कि गोरखपुर मेडिकल कॉलेज को सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के लिए 150 करोड़ रुपए देने की स्वीकृति मिले। दूसरे, जो गोरखपुर यूनिवर्सिटी है, मैं उसको केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा देने की मांग करती हूं और गोरखपुर में एक खाद का

कारखाना है, माननीय सभापति जी, मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि जब यह कारखाना चल जाएगा, तो शायद पूर्वांचल के विकास में थोड़ी बहुत भूमिका जरूर हो जाएगी। मैं इस सदन के सभी सदस्यों को बहुत ही आदरपूर्वक, बहुत ही सम्मान पूर्वक प्रणाम करती हूँ, धन्यवाद।

DR. K.P. RAMALINGAM (Tamil Nadu): Thank you, Mr. Chairman, Sir, for this opportunity. Sir, anything can be tolerated but forgetting the help rendered by elders is not acceptable. So, you may please give me some more time to express my gratitude to all.

Therefore, I would like to express my sincere gratitude to hon. Chairman of this august House, the hon. Vice-President of India, hon. Deputy Chairman, hon. Finance Minister, the Leader of this House, hon. Prime Minister, hon. former Prime Minister and all the leaders of all parties.

I feel that I have to register my thanks from marshals to the Secretary-General and the executive staff because they have done wonderful work. Whenever I raise my hand for supplementary question, marshals recognize me and I get a chance. During my school days, I never imagined that I would be elected as the Member of this august House. I served as a Member of the Legislative Assembly in Tamil Nadu for two terms from 1980 onwards and in 1996, I served in the 11th Lok Sabha and from 2010 onwards, Sir, I am here with you. During my school days, I didn't think that I would even become a Panchayat Union President and all, but I got to the highest democratic temple, the Rajya Sabha. I remember here, with feeling of gratitude, the great leader of Tamil Nadu, the then Chief Minister, Makkal Thilagam M.G.R. and the greatest leader Dr. Kalignar. Both of these great leaders had significant part in shaping my entire life and political career and drove me towards the temple of democracy of this nation, both the Assembly and the Parliament of India. My great leader and my Party founder Peraringnar Anna said in this same august House in 1963, "I am the representative of the man in the street".

MR. CHAIRMAN: Dr. Ramalingam, you have to observe the three-minute rule. I am afraid, the Chair has no choice in the matter.

DR. K.P. RAMALINGAM: Sir, I would like to say now, "I am the representative of the man in the agriculture field".

Sir, even though my Starred Questions are rarely listed, during the Question Hour, with the kindness of our hon. Chairman, I had the opportunity to raise so many supplementary questions. At this juncture, I appreciate the hon. Chairman for conducting the Business of this House wonderfully. I personally congratulate hon. Chairman, but I have a concern. I would like to register my humble request that the rule permitting Adjournment Motion should be amended, the clause of Adjournment Motion. It should

[Dr. K.P. Ramalingam]

be removed from the Rule Book as this has been raised on many occasions by the Members to adjourn the Question Hour under rule 267. Question Hour is the threshold of democracy and through the Question Hour only the people of this country could come to know about the functioning of the Ministries and response on a particular issue from the Government.

MR. CHAIRMAN: Dr. Ramalingam, please conclude.

DR. K.P. RAMALINGAM: Sir, I will conclude within two minutes.

MR. CHAIRMAN: I am sorry; I can't give you two minutes. You have already taken more than three minutes.

DR. K.P. RAMALINGAM: Sir, during my Parliamentary days, I had the biggest confidence that a separate Budget for agriculture would be introduced by the Government. Even I had argued for the need of a separate Budget for agriculture 34 years ago in 1983, in Tamil Nadu Legislative Assembly. The present Government should come forward in this regard.

Lastly, Sir, with this thinking, my journey in politics continues and will continue in future also. In 1972, I started my political career. I met a number of incidents of insult, but I feel there is no gain without pain.

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

DR. K.P. RAMALINGAM: Sir, I would say that this is the House in which our hon. beloved leader, Perarigar Anna, was a Member, and I am also here. So, I am thankful to everybody.

MR. CHAIRMAN: Thank you. I will call the next speaker now.

DR. K.P. RAMALINGAM: *Bahut-bahut dhanyavad,* Sir. Before I finish, my voice in this House must be in my mother tongue - Tamil. So, I would like to pronounce aThirukkural quote,

*That means, "He who has killed every virtue may yet escape; there is no escape for him who has killed a benefit."

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, Shri V. Hanumantha Rao: Three minutes, please.

SHRI V. HANUMANTHA RAO: Mr. Chairman, Sir, I have been a Member of the Rajya Sabha since 2004 for two terms. My term is now coming to an end. I have had very memorable and glorious moments in this House, which I can be proud of.

*English translation of Tamil portion.

Coming from a backward community and serving my people is a God-given opportunity for me and for this, I specially thank my leaders, late Indira Gandhiji, Rajiv Gandhiji, my Party President - Sonia Gandhiji, Dr. Manmohan Singhji and Rahul Gandhiji.

Sir, I always fought for the weaker sections of people and I have been in the forefront on any issues concerning OBCs, minorities and SC/STs. As the Convener of the Forum of OBC MPs, I had been taking up and pursuing the important issues with the Government concerning the welfare of the OBCs.

I am proud to say that our Forum was able to achieve some success during the UPA Government (in 2006) like reservation in seats for OBCs in higher educational institutions like IITs, IIMs, AIIMS, etc., in order to help them gain higher levels of representation in these institutions. I am thankful to the UPA Chairperson, Sonia Gandhiji, for her initiative on this.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY (Nominated): Sir, she is not a Member of this House. Please expunge it. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please sit down. ...*(Interruptions)*... Please let him conclude. ...*(Interruptions)*...

SHRI JESUDASU SEELAM (Andhra Pradesh): Sir, kindly reprimand him ...*(Interruptions)*... from the Chair.

MR. CHAIRMAN: Please sit down. You are impinging on his time. ...*(Interruptions)*...

SHRI V. HANUMANTHA RAO: Another milestone for the upliftment of OBCs in the country is the setting up of Parliamentary Committee on Welfare of OBCs in 2012, for which I thank my leader, Rahul Gandhiji, for his timely initiative and support on this issue. However, there are still some issues, for which we have been fighting and which we have yet to achieve like giving Constitutional powers to NCBC, reservation in private sector, removal of creamy layer, and also reservations in Judiciary.

Sir, due to lack of monitoring mechanism, the OBC reservations have not yet reached even the double-digit level despite more than 23 years of providing reservation to OBCs in jobs and education.

MR. CHAIRMAN: Your time is up now. Please conclude.

SHRI V. HANUMANTHA RAO: Sir, I should get five minutes.

MR. CHAIRMAN: No; you will not get five minutes.

SHRI V. HANUMANTHA RAO: Sir, on the last day, you should allow me.

MR. CHAIRMAN: I am sorry; there are other speakers also.

SHRI V. HANUMANTHA RAO: Like the SC/ST Commission, the NCBC should also be given Constitutional powers to address the grievances of OBCs and to monitor the 27 per cent reservation.

MR. CHAIRMAN: Don't read a speech.

SHRI V. HANUMANTHA RAO: Sir, due to liberalization and globalization, unemployment has been on the rise, especially among the downtrodden and backward sections of the society. The private sector is getting all the support from the Government. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: After three minutes, nothing will go on record.

SHRI V. HANUMANTHA RAO: *

MR. CHAIRMAN: Thank you.

SHRI V. HANUMANTHA RAO: *

MR. CHAIRMAN: Please finish. ...*(Interruptions)*...

SHRI V. HANUMANTHA RAO: *

MR. CHAIRMAN: Please finish. ...*(Interruptions)*... I will call the next speaker. ...*(Interruptions)*... Please finish. ...*(Interruptions)*... This will not go on record. ...*(Interruptions)*... No, there is no last thing, please sit down.....*(Interruptions)*... Please sit down. Now, Shri V.P. Singh Badnore. ...*(Interruptions)*...

SHRI V. HANUMANTHA RAO: *

MR. CHAIRMAN: I cannot listen because it is over. ...*(Interruptions)*...

SHRI V. HANUMANTHA RAO: *

MR. CHAIRMAN: This is not going on record. What is the point in speaking?

SHRI V. HANUMANTHA RAO: *

MR. CHAIRMAN: Please sit down. ...*(Interruptions)*... Please sit down. Mr. V.P. Singh Badnore, please start.

---

*Not recorded.

SHRI V.P. SINGH BADNORE (Rajasthan): Sir, how can I start? ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: But this is indiscipline. ...*(Interruptions)*... Surely, a retiring Member cannot do this. ...*(Interruptions)*... Please.

SHRI V. HANUMANTHA RAO: *

MR. CHAIRMAN: Will you please sit down? ...*(Interruptions)*... What is this? ...*(Interruptions)*... Should I give your time? ...*(Interruptions)*... All right. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*... This is not on record after three minutes. ...*(Interruptions)*...

SHRI V. HANUMANTHA RAO: *

MR. CHAIRMAN: Now, Mr. V.P. Singh Badnore. I am sorry; please try to stick to time. The Chair has no problem. You can sit here till the evening but, I believe, there is an understanding amongst leaders that we would conclude this Session in a certain time span. So, please try to cooperate.

SHRI V.P. SINGH BADNORE: Mr. Chairman, Sir, I would first say that in the maiden speech and the farewell speech, there should be no guillotine but I will not take that long.

MR. CHAIRMAN: You have been in the Chair. So, how can you make that comment?

SHRI V.P. SINGH BADNORE: Sir, in this permanent House, there is a luring feeling of impermanency, more so, when we lose a friend as we lost yesterday. For us mortals, nothing is permanent. Something what is permanent and constant is 'change'.

Sir, I praise our Founding Fathers for having this bicameral system here, which we got from the British House of Lords and the House of Commons. But I feel that about this House, they would have never thought of that there would be a Well, where we would not just go to drink water but go and disturb the House. Sir, we feel that it is a question of shame to us, and, we hang our heads in shame that instead of deliberating and discussing, we go and disturb this House. Sir, you have been here for the last nearly eleven years, and, I think, this is of concern to everybody. I would like to plead to you that we have a system and not the way that you invoke Rule 255 and Rule 256. Something can be worked out to have a system whereby if somebody goes into the Well, it might be a group or whatever, they are suspended for the following two days, and, then, it would never happen.

---

*Not recorded.

MR. CHAIRMAN: Rules are made by the Members.

SHRI V.P. SINGH BADNORE: Sir, we can make an exception that if it is done in the Zero Hour, it is acceptable; and, they will be happy about it. ...*(Interruptions)*... but not later on. ...*(Interruptions)*...

DR. T. SUBBARAMI REDDY (Andhra Pradesh): When you were in opposition, you also went to the well. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please. ...*(Interruptions)*... देखिए, टाइम खत्म हो रहा है। ...(**व्यवधान**)... V.P. Singhji, please stick to your time schedule.

SHRI V.P. SINGH BADNORE: Yes, Sir.

My profound gratitude to my party hierarchy, the Prime Minister, the Chairman, the Deputy Chairman, who has always been very kind to me, the Leader of the House, the Leader of the Opposition and the security, the Secretary-General, the people who are working here day and night to see that we get our papers in time.

MR. CHAIRMAN: Thank you.

SHRI V.P. SINGH BADNORE: Sir, in the end, on this somber day, after expressing all the profound gratitude to everybody, I would like to say the *Jainee* way, *'Michchami Dukhadam'*. I want forgiveness from everybody if I have done any wrong to anybody. And, in the end, let me quote John Keats on this sad day, and I would quote from the famous "Ode to Melancholy".

"in the very temple of Delight

Veil'd Melancholy has her Sovran shrine..."

Thank you.

श्री अश्क अली टाक (राजस्थान): सम्माननीय सभापति महोदय, लोकतंत्र के इस पावन मंदिर में मुझे छः साल पहले आने का अवसर मिला था। आप सबका जो स्नेह और प्यार मुझे मिला, वह मेरे जीवन की निधि है। चाहे उपसभापति जी हों, नेता सदन हों, प्रतिपक्ष के नेता हों या पूर्व प्रधान मंत्री जी हों, मुझे इन सबका निरंतर प्यार मिलता रहा, इसके लिए मैं आप सबका और इस सदन के सभी दलों का ह्रदय से बहुत-बहुत अभिवादन और धन्यवाद करना चाहता हूं।

राजनीति के इस सफर की शुरुआत मैंने स्कूल से की, फिर महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के चुनाव लड़े। इस सफर में कहीं स्कूल का मंत्री रहा और कहीं कॉलेज और यूनिवर्सिटी की सीनेट में रहा। उसके बाद 1985 में मुझे विधान सभा के सदस्य के रूप में आने का अवसर मिला, फिर चीफ व्हिप रहा, मंत्री रहा। मुझे चार-चार मुख्य मंत्रियों के साथ काम करने का गौरव मिला, जिनमें श्री हरदेव

जोशी जी, शिव चरण माथुर जी, श्री अशोक गहलोत जी और भैरोंसिंह शेखावत जी रहे, जो इस सदन के सभापति भी रहे। इन सबके साथ काम करने के बाद राजनीति के सफर में मैं NSUI का राज्य स्तरीय अध्यक्ष रहा, Youth Congress का राज्य स्तरीय अध्यक्ष रहा, फिर प्रदेश कांग्रेस कमेटी का महामंत्री रहा, लेकिन हर जगह एक कार्यकर्ता के रूप में मैंने अपनी पहचान बनाई और उसी पहचान के साथ अलग-अलग स्थानों से मैंने चुनाव लड़े। मुझे फतेहपुर सीकरी जिले से, चुरू जिले से, जो मेरा विधान सभा क्षेत्र है और जयपुर से चुनाव लड़ने का गौरव मिला। इस प्रकार तीनों विधान सभा क्षेत्रों से चुनाव लड़ने के बाद, चार मुख्य मंत्रियों के साथ काम करने के बाद चार प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्षों के साथ काम करने के बाद केन्द्रीय नेतृत्व में मैंने इन्दिरा जी को देखा, राजीव जी को देखा और इन सबके बाद मुझे श्रीमती सोनिया जी से जो स्नेह मिला, जिनके कारण मुझे राज्य सभा के सदस्य के रूप में नियुक्त होने का अवसर मिला, इसके लिए मैं ह्रदय से उनका आभार व्यक्त करता हूं। मेरे राज्य के जो भी विषय रहे, उनको लेकर चाहे यूपीए की सरकार रही हो या एनडीए की सरकार रही हो, मेरे दल के जो भी निर्देश मुझे मिले, मैंने सदैव उन निर्देशों का पालन किया, साथ ही आपके आदेशों का पालन भी किया।

इस आदेश पालन के साथ आज यह विदाई की वेला है। मैं आपका, आपके साथ सभी दलों का और सभी माननीय सदस्यों का अपने दिल की गहराइयों से शुक्रिया अदा करता हूँ कि आपका मार्गदर्शन जीवनपर्यन्त मेरे काम आएगा, आपसे सम्बन्ध जीवनपर्यन्त मेरे काम आएगा। जिन्दगी के सफर में यह कोई शाम नहीं है और यह कोई वीरान नहीं है। कल हम फिर नया सफर शुरू करेंगे, धन्यवाद। जय हिन्द।

MR. CHAIRMAN: Shri Ishwarlal Shankarlal Jain. Three minutes, please.

श्री ईश्वरलाल शंकरलाल जैन (महाराष्ट्र): सभापति महोदय, मैं सबसे पहले तो आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे अपने विचार व्यक्त करने का मौका प्रदान किया है।

महोदय, वैसे इस हाउस में आने के पहले मैं महाराष्ट्र विधान सभा में दो बार आया था। ...(**व्यवधान**)... मैंने पहले वहाँ काम करते हुए काफी कुछ सीखा। ...(**व्यवधान**)... System को समझ लिया, परन्तु...(**व्यवधान**)...

सभापति महोदय, उस समय से मेरे दिल में यही था कि मैं राज्य सभा के अन्दर जाऊँ, मुझे बड़े sphere में जाकर पूरे देश की स्टडी करने का मौका मिले, serve करने का मौका मिले और कुछ सीखने का मौका मिले। इसलिए विधान सभा में दो-बार जाने के बाद मेरे नेता ने मुझे कई बार कहा कि आप चुनाव में जीत कर नहीं आ सके, तो आप विधान परिषद में आ जाइए, आपको काफी सेवाएँ देनी हैं, परन्तु महोदय, मुझे वह इच्छा नहीं होती थी। मैंने यही कहा कि अगर आपको मुझे स्थान देना ही है, तो मैं राज्य सभा में आना चाहता हूं और अगर उसके लिए मुझे वेट करना पड़ेगा, तो मैं वेट करने को तैयार हूँ। तो कई साल वेट करने के बाद उन्होंने मुझे यहाँ आने का मौका दिया और मैं यहाँ आया। मैं यहाँ जिस आशा से आया, जिस अपेक्षा से आया, मुझे यह कहते हुए बड़ा संतोष है, खुशी है कि मैं उसको अच्छी तरह से enjoy कर सका और मुझे काफी कुछ सीखने को मिला। मुझे राष्ट्रीय नेताओं का स्नेह मिला। मुझे भूतपूर्व प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह जी और उनके केबिनेट के लोगों का सहयोग

[श्री ईश्वरलाल शंकरलाल जैन]

मिला, आज के वर्तमान प्रधान मंत्री और उनके कैबिनेट के तथा इस हाउस के नेता का भी सहयोग मिला और उनके आशीर्वाद भी मिले, प्रेम भी मिला और स्नेह भी मिला। मैं एक बात जरूर कहना चाहता हूँ कि मुझे जितना इस हाउस के अन्दर सीखने को नहीं मिला, उससे ज्यादा कमेटीज़ के अन्दर काम करते हुए विषयों को समझने का और काम करने का मौका मिला। उससे मैं काफी कुछ सीख सका, इससे मैं अपने आपको संतुष्ट मानता हूँ।

सभापति महोदय, आप सब का प्रेम तो मुझे मिला, सहयोग भी मिला, परन्तु निवृत्त होने के बाद क्या यह यहीं खत्म हो जाएगा? यहाँ कहा गया कि कई मेम्बर्स वापस आएँगे। मैं तो चाहता हूँ कि ठीक है, वे आएँगे, परन्तु सब आएँगे, ऐसी अपेक्षा करना गलत होगा, क्योंकि कुछ नये विचारों के आने के लिए भी जगह हानी चाहिए। अगर यहाँ कुछ नये विचार आएँगे, तभी तो हमारा देश भी आगे बढ़ेगा। मैंने उसी भावना के साथ अपने आपको डिक्लेयर किया है कि मैं अब अपना दूसरा sphere चूनूँगा, दूसरी जगह काम करूँगा। यहाँ का जो स्नेह मुझे मिला है, वह मेरे साथ रहेगा। आपका जो मार्गदर्शन और स्नेह मुझे मिला, उसके लिए मैं धन्यवाद देता हूँ और यही आगे भविष्य में भी मिलता रहे, यह अपेक्षा व्यक्त करता हूँ, धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Thank you Ishwarlalji. Now, Shri Arvind Kumar Singh. Three minutes.

श्री अरविन्द कुमार सिंह (उत्तर प्रदेश): सभापति महोदय, मैं आपका आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने विदाई के मौके पर मुझे बोलने का मौका दिया है। मुझे पहले भी मौके मिले हैं और इस सदन में मैंने छात्रों, नौजवानों और समाज के दबे-कुचले लोगों का आवाज़ उठाई है।

महोदय, छात्र राजनीति के माध्यम से मेरा संसदीय जीवन में प्रवेश हुआ। मुझे याद है, 7 मार्च, 2012 को मुझे राज्य सभा में आने की सूचना मिली। उस वक्त सुबह के दस बज रहे थे, मेरी पत्नी मेरे सामने खाना परोस कर लाई थी। मैंने सोचा कि इस खुशी को मैं किसी को न बताऊँ, लेकिन रहा नहीं गया। मैंने अपनी पत्नी से कहा कि संघर्ष के रास्ते में, लगता है कि बदलाव का समय आ रहा है। उसने पूछा कि क्या हुआ, तो मैंने बताया कि नेताजी का फोन आया था। फिर थोड़ी देर बाद, शायद प्रो. राम गोपाल यादव जी को याद होगा, इनका भी फोन मेरे पास आया। हमने कहा कि पार्टी ने हमें राज्य सभा में भेजने का फैसला लिया है। लेकिन जब जीवन में स्थायित्व नहीं है तो राजनीतिक पद भी स्थायी नहीं होता है। जिस दिन हमने शपथ ली, उसी दिन हमने सोचा था कि एक न एक दिन यह पद हमसे अलग भी होगा। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि इस सदन के साथियों को, हमें याद है, इस सदन में हमने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। एक ऐसा समय भी देखा जब डिप्टी चेयरमैन कुरियन साहब ने हमारा निलम्बन भी किया था इस सदन से, लेकिन मैं भरोसा दिलाता हूं कि शुरू से पीठ से, डिप्टी चेयरमैन साहब से और सम्मानित सदस्यों से मुझे स्नेह मिलता रहा है। मैं विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूं, नाम तो नहीं लेना चाहता था लेकिन बगैर लिए जी नहीं मानता है। मैं जब यूनिवर्सिटी का अध्यक्ष था 1997 में, तब से प्रो0 राम गोपाल यादव जी हमारा काम देखते थे और कभी कुछ नहीं कहते थे लेकिन अन्तर्मन में हमारे कार्यों का मूल्यांकन करते थे। उसकी देन है कि आज मैं इस सदन में हूं। मैं पूरे सदन को भरोसा दिलाता हूं कि जो हमने बड़ों से सीखा है, जो अपने से कनिष्ठों से सीखा है, सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन में मैं उसका अनुकरण करूंगा और भरोसा दिलाता हूं कि सदन में रहूं या सदन के बाहर रहूं, मैं

सदन की गरिमा का पूरा ख्याल रखूंगा। आपने मौका दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द, जय समाजवाद, मुलायम सिंह यादव जिंदाबाद।

MR. CHAIRMAN: Shri Baishnab Parida, you have three minutes. I am sorry. I have no choice in the matter.

श्री बैष्णव परिडा (ओडिशा)ः सर, बहुत-बहुत धन्यवाद। जब से हम इस हाउस में आए हैं और शपथ ली थी, यह शपथ मेरी मातृभाषा - उड़िया में थी। आज विदा ले रहा हूं, तो मैं सोचता हूं कि हम अपनी मातृभाषा में दो-चार बातें बोलेंगे।

Sir, interpretation is there.

*Mr. Chairman, Sir, today we are bidding farewell to the retiring Members of Rajya Sabha. It is an emotional occasion. Rajya Sabha is the highest temple of democracy in our country. Sir, I had the opportunity to work in Rajya Sabha for six years. On this occasion I am reminded of the famous poetic line "Sweetest songs are those which tell the saddest thoughts." Usually when we express our sad emotions in poetry it brings happiness in mind. During this period of six years, I have got the opportunity to learn a lot from the reputed leaders, intellectuals, economists and famous Parliamentarians of Rajya Sabha. I have got more opportunity to listen than to speak in this august House. On this day I remember the lines of the famous English poet who said; "those who stand and wait also serve the God". As a disciplined soldier, I maintained discipline in the House. I spoke only when the Chair asked me to speak. A good soldier is always prepared for war and whenever he gets the order he comes forward to fight. In the same way I have been fighting for democracy as a disciplined soldier since my student days. I have lived my life through many struggles. I have realised this fact that in spite of debates and discussions and differences of opinion we have been able to maintain the dignity of this august House. In a multi-party system, House works and works in a very dignified way.

MR. CHAIRMAN: Thank you.

SHRI BAISHNAB PARIDA: *I would like to emphasize the fact that corruption is the greatest enemy of our country. Therefore, there is an urgent need to root out corruption from our country. Sir, I take this opportunity to express my thankfulness to all my colleagues present in the House. I would also like to express my gratitude to you and also to the Hon'ble Dy. Chairman for guiding me and running the House most efficiently. Before concluding my speech I would like to thank you once again.

MR. CHAIRMAN: It is over. I am sorry. You have to stop now. Please. You have run out of your time.

* English translation of the original speech made in Odia.

SHRI BAISHNAB PARIDA: And, Sir, now about language. Regional languages of India are dying due to the overall influence of English. So, my request to my hon. colleagues is that let us keep our regional languages for our identity, for our nationality. That should be honoured, that should be protected and that should be developed.

MR. CHAIRMAN: Thank you Paridaji. Let me call the next speaker. Shri Tarun Vijay. Please use your immense rhetorical skills to confine it to three minutes.

श्री तरुण विजय (उत्तराखंड)ः सभापति महोदय, तीन मिनट कब शुरू होंगे?

श्री सभापतिः शुरू हो गए।

श्री तरुण विजयः लाल बत्ती नहीं जली। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश)ः सर, जो सदस्य यहां पर हर विषय पर लंबा-लंबा बोलते थे, जैसे के.सी. त्यागी जी हैं, तरुण विजय जी हैं, उनको विदाई के समय सिर्फ दो लाइनें बोलनी चाहिए, धन्यवाद करके बैठ जाना चाहिए।

MR. CHAIRMAN: That is a very good suggestion. Thank you. आप दूसरे माइक से बोलिए।

श्री तरुण विजयः सभापति महोदय, मैं जिस उत्फुल्लता और रोमांच के साथ इस सदन में पहले दिन आया था, उसी उत्फुल्लता और रोमांच के साथ मैं आप सबको प्रणाम करता हूँ। 36 साल पहले मैं सिन्धु सागर के तट पर भाजपा के उस अधिवेशन में था, जिसकी अध्यक्षता मोहम्मद करीम चांगला ने की थी। भाजपा की पूरी नक्षत्र गंगा थी और उसकी रिपोर्टिंग मैंने यह लिखते हुए की थी कि "मुम्बई में उभरा एक विकल्प"। मुझे कल्पना नहीं थी कि 36 साल बाद जब मैं सदन के केन्द्रीय कक्ष में बैठा होऊंगा और नरेन्द्र दोमादरदास मोदी को शपथ लेते हुए देख रहा होऊंगा, तो मैं एक सांसद के रूप में उन शब्दों की सत्यता का साक्षी बनूंगा। यह परिवतन का युग मैंने देखा, मैं इसका साक्षी बना की मेरे पिता जी, जब मैं बच्चा था, तो मुझे कंधे पर बिठा कर पंडित जवाहरलाल नेहरू का भाषण सुनाने देहरादून के परेड ग्राउण्ड में ले गए थे। संघ के गुरू गोलवलकरजी जब देहरादून आए, तब डॉ. नित्यानन्द जी ने मुझे उस सभा में गुरू गोलवलकरजी का बाल प्रहरी बनाया था, तब से इमरजेंसी में पूरे परिवार ने संघर्ष किया और जब इस क्षण का साक्षी बना, तब मैं सबको धन्यवाद देता हूँ और उन बातों को याद करता हूँ, जो पूज्य रज्जू भैया ने मुझे बताई थी कि तरुण, तुम्हारी बातों से लोग सहमत नहीं होंगे, विचारधारा का विरोध करेंगे, कार्यक्रमों का विरोध करेंगे, लेकिन जब तक वे भारत के हैं, वे सब तुम्हारे अपने हैं। हमारा जो बिन्दु है मिलन का, वह भारत और भारतीयता है। मुझे इस बात का बहुत पुण्य है कि मुझे सबका प्रेम, आशीर्वाद और सहयोग मिला, आदरणीय अरुण जी, नक़वी साहब, नज़मा आपा ही नहीं, फातमा आपा का सहयोग मिला। डा. मनमोहन सिंह जी से जब भी मैं मिला, मैंने उनको "पैरी पैना" कहा। आज तो मैं सत्यव्रत जी के साथ उनकी गाड़ी में ही बैठ कर आया। मुझे जया जी का बहुत स्नेह मिला, राम गोपाल जी ने मुझे अकारण अहेतुक स्नेह दिया और यही मेरी बहुत बड़ी थाती है। रापोलू जी रात को 12 बजे मुझे जन्म दिन की बधाई देने के लिए आए थे। इसलिए सर, मैं केवल एक बात कहना चाहता हूँ और वह बात यह है कि यह जो परिवतन है, यह देश को आगे ले जाने वाला है। जब हम विदेशों में जाते हैं तो देखते हैं कि वहाँ का सदन बहुत अच्छा चल रहा है, लेकिन जब हम यहाँ की गरीबी देखते हैं तो पेट में अल्सर होता है। दलितों के साथ इतना अन्याय होता है कि हम उनको मनुष्य नहीं मानते हैं और जब एक ने दूसरे से शादी कर ली तो हम उसे जान से मार डालते हैं।

यह कहाँ का संस्कार है, कहाँ की सभ्यता है? कहाँ तो हम हज़ारों सालों का दम्भ और पाखंड करते हैं कि हमारी हज़ारों सालों की सभ्यता है, लेकिन हम हिन्दू की एक जाति से दूसरी जाति में विवाह को सहन नहीं कर पाते हैं। यह समरसता की बात है। दो शमशान घाट आज भी हैं, दो गिलासों का सिस्टम आज भी है। हमारे संघ के सरसंघचालक, मोहन भागवत जी ने इसके विरुद्ध कहा है। डा. हेडगेवार के दो अनुयायी, मोहन जी भागवत और नरेन्द्र मोदी जी इसको खत्म करने के लिए चले हैं, तो इसमें सबका साथ होना चाहिए। जब यह समरसता नहीं है तो हिन्दुस्तान का कोई अर्थ नहीं है, फिर यह सभ्यता-संस्कृति की बात करने का कोई अर्थ नहीं है।

सभापति महोदय, दूसरी बात यह है कि सैनिकों का सम्मान होना चाहिए। सैनिकों के सम्मान के लिए सदन जो भी करे, वह कम है। मैं dyslexic बच्चों के बारे में दो साल से प्रयास करता रहा कि उन पर चर्चा हो, लेकिन वह नहीं हो पाई। उसमें जया जी ने भी हमारा बहुत साथ दिया, लेकिन उस पर हमें चर्चा करनी चाहिए। सर, मुझे इस बात का फख्र है कि आप सबके आशीर्वाद से हम लोगों ने एक साथ मिलकर काम किया और वह काम इस रूप में आया कि पीआरएस के द्वारा मुझे उन लोगों के बीच में गिने जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं सर्वाधिक अटेंडेंस, सर्वाधिक ज़ीरो ऑवर, सर्वाधिक स्पीच, सर्वाधिक डिबेट, सर्वाधिक प्राइवेट मेम्बर्स बिल और सर्वाधिक इंटरवेंशन वाला सांसद तो बना, लेकिन उससे बढ़कर मुझे एक सौभाग्य यह प्राप्त हुआ कि मैं शायद आप सबका, उधर का और इधर का, सर्वाधिक प्रेम और आशीर्वाद पाने वाला सांसद भी बना, जिसके लिए मैं आपका जीवन भर आभारी रहूँगा।

सर, अंत में मैं एक ही बात कहना चाहता हूँ। अभी बहन कनक जी बोल रही थीं। मोहन सिंह जी से मेरा भी बहुत अच्छा संबंध रहा। कुरियन साहब ने जो मुझे दिया, उसके लिए I salute him. I will never forget you, Mr. Chairman, Sir, you were like a patron and guardian to me. आपका मेरे प्रति जो स्नेह रहा, उसका कई बार मैंने दुरुपयोग करने की भी कोशिश की, लेकिन मैं जानता हूँ, you love me. आपने मुझे बहुत सहारा दिया और आपने मेरी interventions को भी बहुत तरजीह दी। मेरे आदर्श शरद जी भी रहे। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Tarunji, thank you.

श्री तरुण विजयः सर, मैं लास्ट में एक ही बात कहूँगा कि रज्जू भैया कहते थे कि भगवान से सब कुछ माँगो, लेकिन उसके साथ एक चीज़ यह भी माँगना कि दम्भ न आने पाए, क्योंकि यह सब कुछ समाप्त कर देता है। जो विनय है, वह मैंने अपने यहाँ सीखी, संघ में सीखी और मैंने यह बात भी सीखी कि जो तुमसे मतभेद रखता है, उसके साथ कभी भी मन-भेद न होने दो, क्योंकि हम सब एक साथ काम करते हैं। सब पर विश्वास करो कि सब भारत का भविष्य सुधारने वाले हैं।

MR. CHAIRMAN: Tarunji, please.

श्री तरुण विजयः सर, मैं एक शेर कहना चाहता हूँ, जो मैं हमेशा कहता आया हूँ औ सुनता आया हूँः

"दुश्मनी जमकर करो, लेकिन यह गुंजाइश रहे,
जब कभी हम दोस्त बन जाएँ तो शर्मिन्दा न हों।"

सर, मैं एक चीज़ कहना भूल गया। ...(**व्यवधान**)... पार्टी ने मुझे बहुत कुछ दिया, जिसके योग्य

[श्री तरुण विजय]

मैं नहीं था। मैं पार्टी का आभारी हूँ। अब चाहे मुझे जो भी काम मिले, मैं कहूँगा - जीवन में मुझे जो मिलना था, वह मिल गया है। ...(**व्यवधान**)... धन्यवाद, वन्दे मातरम्।

MR. CHAIRMAN: Tarunji, thank you very much. Shrimati Mohsina Kidwai.

श्रीमती मोहसिना किदवई (छत्तीसगढ़): चेयरमैन साहब, मैं आपकी बहुत मशकूर व ममनून हूँ कि आपने मुझे भी मौका दिया। मैं एक शेर से अपनी बात शुरू करना चाहती हूँ:

"वही जिन्दगी, वही मरहले,
वही रास्ते, वही कारवां,
मगर अपने-अपने मुकाम पर,
कभी हम नहीं, कभी तुम नहीं।"

सर, यह हाउस कभी डिजॉल्व होने वाला हाउस नहीं है। मैं समझती हूँ कि हम लोग बहुत खुशकिस्मत हैं, जो किसी भी हाउस के मेम्बर बनते हैं और इतना बड़ा मैण्डेट लेकर आते हैं। हम खुशकिस्मत हैं कि पूरे मुल्क से हम लोगों को यहाँ के लिए चुना जाता है। हम जब यहाँ आते हैं तो नये-नये विचार, नये ख़याला‍त सुनते हैं। नई नस्ल, पुरानी नस्ल, दोनों को यहाँ हम देखते हैं। यह "हाउस ऑफ एल्डर्स" तो है, लेकिन अब चूंकि हिन्दुस्तान नौजवान है, इसलिए यहाँ नौजवानों का आना भी स्वाभाविक है। यह एक अच्छा साइन है कि यह "हाउस ऑफ एल्डर्स" कहलाता है और उसी हिसाब से यहाँ की चर्चाएँ होती हैं, जिसे लोग बहुत ग़ौर से सुनते हैं। मुझे अल्लाह ने मौका दिया। मैं सबसे पहले यू.पी. की काउन्सिल में, असेम्बली में मेम्बर बनी। फिर खुदा का शुक्र है कि मैं लोक सभा मेम्बर बनी और अब राज्य सभा में, मेरी पार्टी ने इस काबिल समझा कि उन्होंने मुझे यहाँ भेजा।

चेयरमैन साहब, इस हाउस में चेयर रूल बुक से बंधी हुई है। बगैर रूल के ज़ाहिर है कि काम हो ही नहीं सकता। यह बड़ा पुरवक़ार हाउस है। यह हाउस हो या लोक सभा हों, यह बड़ी बा-अज़मत जगह है। उस dignity को, उस अज़मत को, उस वक़ार को कायम रखना, हम लोगों की जिम्मेदारी है कि हम मेम्बर्स उसकी dignity, उसकी अज़मत और उसके वक़ार के ऊपर आंच न आने दें। जब तक हम दोनों मिलकर काम नहीं करेंगे, तब तक यह हाउस नहीं चल सकता है। मैं अपनी बात तो लम्बी कहना चाहती थी, लेकिन वक्त की कमी है, इसलिए मैं थोड़े में अपनी बात को कहूंगी। इस देश की जो विचारधारा है, इस देश का एक पूरा नक्शा है - वह देश का मिज़ाज, अमन, शांति और भाई-चारे का है। इसको हम कहीं से लाए नहीं हैं, हम सदियों से इसी पर चले आ रहे हैं। इसकी जो हिस्ट्री है, माननीय सभापति जी, हिस्ट्री एक दिन में पूरी नहीं होती है, जो उस वक्त का हिस्टोनियन होता है, वह हिस्ट्री लिखता है। आप चाहे महात्मा गांधी का नाम लीजिए, चाहे नेल्सन मंडेला का नाम लीजिए, जहां तक मुझे ख्याल है, उन्होंने अपनी उम्र के 47 साल जेल में गुज़ारे अंग्रेज़ों से लड़ने में या आप मार्टिन किंग लूथर का नाम लीजिए या यासिर अराफात का नाम लीजिए, तो अपने वतन की आज़ादी बहुत बड़ी चीज़ है। हम यह कहते हैं कि स्वर्ण अक्षरों में हमारी हिस्ट्री लिखी जाएगी या हम उर्दू में कहते हैं कि सुनहरे औराक़ होते हैं किसी हिस्ट्री का हिस्सा। कभी हमने यह सोचा है कि जो दो-चार पन्ने हिस्ट्री में स्वर्ण अक्षर के होते हैं, उसके पीछे इतिहास क्या है, उसके पीछे कितनी कुरबानी है, उसके पीछे बलिदान कितना है, उसके पीछे यातनाएं कितनी हैं? तब कहीं जाकर किसी देश की किस्मत में, उन्हें आप स्वर्ण अक्षर कहिए या सुनहरे अल्फाज़ कहिए, ये उस हिस्ट्री का हिस्सा बनते हैं। जब बहस शुरू होती है, उनके नाम आप सफा-ए-हस्ती से या दुनिया की तारीख से मिटा नहीं सकते हैं, इसलिए हमें अपनी उस हिस्ट्री को याद रखना चाहिए। मैं सबसे बड़ी बात यह कहना चाहती हूँ कि महात्मा गांधी जी

1.00 P.M.

की विचारधारा को हम मानते आए हैं। उस विचारधारा के आधार पर उन्होंने सल्तनत-ए-ब्रतानिया, जो सबसे बड़ी सल्तनत समझी जाती थी, उसका मुकाबला गरीब हिन्दुस्तानियों ने किया था। हमने दुनिया को दिखा दिया कि हम अपने वतन के लिए भूखे-नंगे रह सकते हैं, हमारे पास तालीम नहीं है, लेकिन हम वतन पर मरने की हिम्मत और हौसला रखते हैं और हमने अंग्रेज़ों से लोहा लेकर दिखाया। हमारे वे संस्कार अभी तक चले आ रहे हैं। जो हिस्ट्री में सबसे पहले जद्दोजहद होती है। नेल्सन मंडेला साहब जैसे बहुत लोग काम करते होंगे, उनका नाम है या यासिर अराफात का नाम है या और लोगों का है, तो महात्मा गांधी भी उसी श्रेणी में आते हैं, नेहरू जी भी उसी श्रेणी में आते हैं। अगर हम अपनी हिस्ट्री को भुला देंगे...

श्री सभापतिः अब आप समाप्त करिए।

श्रीमती मोहसिना किदवईः सर, दो मिनट, दो मिनट। मैं आपसे यह कह रही हूँ कि हमें इन सारी चीज़ों को भुलाना नहीं चाहिए। मैं नॉन-वायलेंस की बात कह रही थी। जो हमारी नॉन-वायलेंस थी, उसकी मैं एक मिसाल देना चाहती हूँ कि हमने दुनिया को सबक सिखाया कि नॉन-वायलेंस से हमने इतनी बड़ी लड़ाई जीती, उसी को हथियार बनाकर अदम-तशद्दुद वॉयलेंस के खिलाफ लड़ाई जीती। मैं नाम लेना चाहती हूँ, आज के अपने लीडरों को कि उन्होंने उस समय कैसे ख्याल रखा। यू0एन0 असेम्बली में भारत की तरफ से जून, 2007 में जहां तक मुझे ख्याल है कि एक प्रस्ताव पास हुआ कि "नॉन वायलेंस" पूरी दुनिया में होना चाहिए और उसको 2 अक्टूबर को, महात्मा गांधी के जन्म दिन पर, जब उसको मार्क करने का दिन आया, तो श्रीमती सोनिया गांधी और डा. मनमोहन सिंह जी वहां थे और वह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ। आज पूरी दुनिया में "नॉन वायलेंस डे" मनाया जा रहा है। यह कांग्रेस की विचारधारा है।

सभापति जी, मैं एक सलाह अपने सामने बैठे हुए लोगों को देना चाहती हूं। मेरे ख्याल में, मैं उम्र में सबसे ज्यादा बड़ी हूं, आपसे ज्यादा तजुर्बे भी होंगे, लेकिन मैं अपने तजुर्बे से कहना चाहती हूं और आप यह मत सोचिए कि मैं एक कांग्रेसी की हैसियत से कह रही हूं, मैं एक कांग्रेसी तो हूं, लेकिन मैं एक हिन्दुस्तानी की हैसियत से आपको सलाह देना चाहती हूं कि इस देश का मिज़ाज अमन, शांति और भाईचारे का है।

आज पूरे मुल्क में जो फिज़ा आ रही है, यह 'अनेकता में एकता' ही इस देश की सबसे बड़ी ताकत है। जैसा हमारा देश है, ऐसा देश आपको दुनिया के किसी भी कोने में नहीं मिलेगा। हम किस चीज़ पर गर्व करते हैं? हम हिन्दुस्तानी हैं, हम फख्र के साथ यह कहना चाहते हैं, इसलिए मैं आपसे यह कहना चाहती हूं कि 'अनेकता में एकता' को कायम रखिए और जो भाई चारा है, जो हमारी सबसे बड़ी ताकत है और सदियों से हम एक दूसरे के साथ रहते आ रहे हैं, आप खुदा के लिए मेरी सलाह मान लीजिए, देश के माहौल को मत बिगड़ने दीजिए, क्योंकि आपके ऊपर कोई असर नहीं होने वाला है, गांवों में एक-एक घर में लड़ाइयां होंगी। आपको मेरी यह राय है कि अगर महात्मा गांधी की तस्वीर पर फूल चढ़ाते हो, तो उनकी विचारधारा non-violence को मानिए।

सभापति जी, मैं आखिर में आपका शुक्रिया अदा करना चाहती हूं, डिप्टी चेयरमैन का शुक्रिया अदा करना चाहती हूं, अपने तमाम साथियों का खास तौर से जो हमारे सेक्रेटेरिएट के लोग हैं, आपके जरिए उनका शुक्रिया अदा करना चाहती हूं। आपका बेहद शुक्रिया।

† [**محترمہ محسنہ قدوائی (چھتیس گڑھ):** چئیرمین صاحب، میں آپ کی بہت مشکور و ممنون ہوں کہ آپ نے مجھے بھی موقعہ دیا۔ میں ایک شعر سے اپنی بات شروع کرنا چاہتی ہوں۔

وہی زندگی، وہی مرحلے
وہی راستے، وہی کارواں
مگر اپنے اپنے مقام پر
کبھی ہم نہیں، کبھی تم نہیں

سر، یہ ہاؤس کبھی ڈیزالو ہونے والا ہاؤس نہیں ہے۔ میں سمجھتی ہوں کہ ہم لوگ بہت خوش قسمت ہیں، جو کسی بھی ہاؤس کے ممبر بنتے ہیں اور اتنا بڑا مینڈیٹ لیکر آتے ہیں۔ ہم خوش قسمت ہیں کہ پورے ملک سے ہم لوگوں کو یہاں کے لیے چنا جاتا ہے۔ ہم جب یہاں آتے ہیں تو نئے نئے وچار، نئے نئے خیالات سنتے ہیں۔ نئی نسل، پرانی نسل، دونوں کو یہاں ہم دیکھتے ہیں۔ یہ 'ہاؤس آف ایلڈرس' تو ہے، لیکن اب چونکہ ہندستان نوجوان ہے، اس لیے یہاں نوجوانوں کا آنا بھی سوابھاوِک ہے۔ یہ ایک اچھا سائن ہے کہ یہ 'ہاؤس آف ایلڈرس' کہلاتا ہے اور اسی حساب سے یہاں کی رچنائیں ہوتی ہیں، جسے لوگ بہت غور سے سنتے ہیں۔

مجھے اللہ نے موقع دیا۔ میں سب سے پہلے یو۔پی۔ کی کائنسل میں، اسمبلی میں ممبر بنی۔ پھر خدا کا شکر ہے کہ میں لوک سبھا ممبر بنی اور اب راجیہ سبھا میں، میری پارٹی نے اس قابل سمجھا کہ انہوں نے مجھے یہاں بھیجا۔

چیئرمین صاحب، اس ہاؤس میں چیئر، رول بک سے بندھی ہوئی ہے۔ بغیر رول کے ظاہر ہے کہ کام ہو ہی نہیں سکتا۔ یہ بڑا پروقار ہاؤس ہے۔ یہ ہاؤس ہو یا لوک سبھا ہو، یہ بڑی باعظمت جگہ ہے۔ اس ڈگنٹی کو، اس عظمت کو، اس وقار کو قائم رکھنا، ہم لوگوں کی ذمہ داری ہے کہ ہم ممبرس اس کی ڈگنٹی، اس کی عظمت اور اس کے وقار کے اوپر آنچ نہ آنے دیں۔ جب تک ہم دونوں مل کر کام نہیں کریں گے، تب تک یہ ہاؤس نہیں چل سکتا ہے۔ میں اپنی بات تو لمبی کہنا چاہتی تھی، لیکن وقت کی کمی ہے، اس لئے میں تھوڑے میں اپنی بات کو کہوں گا۔ اس دیش کی جو وچاردھارا ہے، اس دیش کا ایک پورا نقشہ ہے - وہ دیش کا مزاج، امن، شانتی اور بھائی چارے کا ہے۔ اس کو ہم کہیں سے لائے نہیں ہیں، ہم صدیوں سے اسی پر چلے آ رہے ہیں۔ اس کی جو ہسٹری ہے، مانئے اپ سبھا پتی، ہسٹری

†Transliteration in Urdu Script.

ایک دن میں پوری نہیں ہوتی ہے، جو اس وقت کا ہسٹورین ہوتا ہے، وہ ہسٹری لکھتا ہے۔ آپ چاہے مہاتما گاندھی کا نام لیجئے، چاہے نیلسن منڈیلا کا نام لیجئے، جہاں تک مجھے خیال ہے، انہوں نے اپنی عمر کے 47 سال جیل میں گزارے انگریزوں سے لڑنے میں یا آپ مارٹن کنگ لوتھر کا نام لیجئے یا یاسر عرفات کا نام لیجئے، تو اپنے وطن کی آزادی بہت بڑی چیز ہے۔ ہم یہ کہتے ہیں کہ 'سورن اکشروں' میں ہماری ہسٹری لکھی جائے گی یا ہم اردو میں کہتے ہیں کہ سنہرے اوراق ہوتے ہیں کسی ہسٹری کا حصہ۔ کبھی ہم نے یہ سوچا ہے کہ جو دو چار پنّے ہسٹری میں 'سورن اکشر' کے آتے ہیں، اسے کے پیچھے اتہاس کیا ہے، اس کے پیچھے کتنی قربانی ہے، اس کے پیچھے بلیدان کتنا ہے، اس کے پیچھے پریشانیاں کتنی ہیں؟ تب کہیں جاکر کسی کی قسمت میں، انہیں آپ 'سورن اکشر' کہئے یا سنہرے الفاظ کہئے، یہ اس ہسٹری کا حصہ بنتے ہیں۔ جب بحث شروع ہوتی ہے، ان کے نام آپ صفحہء ہستی سے یا دنیا کی تاریخ سے مٹا نہیں سکتے ہیں، اس لئے ہمیں اپنی اس ہسٹری کو یاد رکھنا چاہئے۔ میں سب سے بڑی بات یہ کہنا چاہتی ہوں کہ مہاتما گاندھی جی کی وچار دھارا کو ہم مانتے ہوئے آئے ہیں۔ اس وچار دھارا کے آدھار پر انہوں نے سلطنت برطانیہ، جو سب سے بڑی سلطنت سمجھی جاتی تھی، اس کا مقابلہ غریب ہندوستانیوں نے کیا تھا۔ ہم نے دنیا کو دکھا دیا کہ ہم اپنے وطن کے لئے بھوکے ننگے رہ سکتے ہیں، ہمارے پاس تعلیم نہیں ہے، لیکن ہم وطن پر مرنے کی ہمت اور حوصلہ رکھتے ہیں اور ہم نے انگریزوں سے لوہا لے کر دکھایا۔ ہمارے وہ سنسکار ابھی تک چلے آ رہے ہیں۔ جو ہسٹری میں سب پہلے جدوجہد ہوتی ہے۔ نیلسن منڈیلا صاحب جیسے بہت لوگ کام کرتے

ہوں گے، ان کا نام ہے یا یاسر عرفات کا نام ہے اور لوگوں کا ہے، تو مہاتما گاندھی بھی اسی زمرے میں آتے ہیں، نہرو جی بھی اسی زمرے میں آتے ہیں۔ اگر ہم اپنی ہسٹری کو بھلا دیں گے۔۔۔

شری اپ سبھا پتی : اب آپ سماپت کرئے۔

محترمہ محسنہ قدوائی : سر، دو منٹ، دو منٹ۔ میں آپ سے یہ کہہ رہی ہوں کہ ہمیں ان ساری چیزوں کو بھلانا نہیں چاہئے۔ میں نان-وائلینس کی بات کہہ رہی تھی جو ہماری نان-وائلینس تھی، اس کی میں ایک مثال دینا چاہتی ہوں کہ ہم نے دنیا کو سبق سکھایا کہ نان-وائلینس سے ہم نے اتنی بڑی لڑائی جیتی اسی کو ہتھیار بناکر عدم تشدد وائلینس کے خلاف لڑائی جیتی۔ میں نام لینا چاہتی ہوں، آج کے اپنے لیڈروں کو، کہ انہوں نے اس وقت کیسے خیال رکھا۔ یو۔این۔ اسمبلی میں بھارت کی طرف سے جون، 2007 میں جہاں تک مجھے خیال ہے کہ ایک پرستاؤ پاس ہوا کہ "نان-وائلینس" پوری دنیا میں ہونا چاہئے اور اس کو 2 اکتوبر کو، مہاتما گاندھی کے جنم دن پر، جب اس کو مارک کرنے کا دن آیا، تو شریمتی سونیا گاندھی اور ڈاکٹر منموہن سنگھ جی وہاں تھے اور وہ پرستاؤ سرو-سمّتی سے پاس ہوا۔ آج پوری دنیا میں 'نان-وائلینس ڈے' منایا جا رہا ہے۔ یہ کانگریس کی وچار دھارا ہے۔

سبھا پتی جی، میں ایک صلاح اپنے سامنے بیٹھے ہوئے لوگوں کو دینا چاہتی ہوں۔ میرے خیال میں، میں عمر میں سب سے زیادہ بڑی ہوں، آپ سے زیادہ تجربے بھی ہوں گے، لیکن میں اپنے تجربے سے کہنا چاہتی ہوں اور آپ یہ مت

سوچئے کہ میں ایک کانگریسی کی حیثیت سے کہہ رہی ہوں، میں ایک کانگریسی تو ہوں، لیکن میں ایک ہندوستانی کی حیثیت سے آپ کو صلاح دینا چاہتی ہوں کہ اس دیش کا مزاج امن، شانتی اور بھائی چارے کا ہے۔

آج پورے ملک میں جو فضا آرہی ہے، یہ انیکتا میں ایکتا ہی اس دیش کی سب سے بڑی طاقت ہے۔ جیسا ہمارا دیش ہے، ایسا دیش آپ کو دنیا کے کسی بھی کونے میں نہیں ملیگا۔ ہم کس چیز پر فخر کرتے ہیں؟ ہم ہندستانی ہیں، ہم فخر کے ساتھ یہ کہنا چاہتےہیں، اس لیے میں آپ سے یہ کہنا چاہتی ہوں کہ انیکتا میں ایکتا کو قائم رکھینے اور جو بھائی چارہ ہے، جو ہماری سب سے بڑی طاقت ہے اور صدیوں سے ہم ایک دوسرے کے ساتھ رہتے آرہے ہیں، آپ خدا کے لیے میری صلاح مان لیجئے، دیش کے ماحول کو مت بگڑنے دیجئے، کیوں کہ آپ کے اوپر کوئی اثر نہیں ہونے والا ہے، گاؤوں میں ایک ایک گھر میں لڑائیاں ہونگی۔ آپکو میری یہ رائے ہے کہ اگر مہاتما گاندھی کی تصویر پر پھول چڑھاتے ہو، تو ان کی وچاردھارا نان وایولینس کو مانیئے۔

سبھاپتی جی، میں آخر میں آپ کا شکریہ ادا کرنا چاہتی ہوں، ڈپٹی چیئرمین کا شکریہ ادا کرناچاہتی ہوں، اپنے تمام ساتھیوں کا خاص طور سے جو ہمارے سکریٹریٹ کے لوگ ہیں، آپ کے ذریعہ ان کا شکریہ ادا کرنا چاہتی ہوں۔ آپ کا بے حد شکریہ۔

(ختم شد)

MR. CHAIRMAN: Now, Shri K.C. Tyagi. I hope you will follow the advice given to you by your neighbour. In any case, nothing more than three minutes.

श्री के.सी. त्यागीः सर, उधर से लेकर नेता सदन तक सभी जानते हैं कि मैं पैदाइशी विद्रोही आदमी हूं और मैंने अल्लाह मियां और भगवान के तो कुछ थोड़े-बहुत हुकुम माने भी होंगे, लेकिन मैं हुकूमतों के नहीं मानूंगा। इसलिए मैं सबसे पहले आपको, उसके बाद डिप्टी चेयरमैन साहब को और सेक्रेटरी जनरल साहब को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं कि कई अवसरों पर न चाहते हुए भी और हस्तिनापुर से बंधे रहने के बावजूद भी आपने मेरी मदद की है, लेकिन सर, अब हम आपकी मर्यादाओं से बाहर हैं, अब हम बाहर जाकर दफा 144 भी तोड़ेंगे।

श्री सभापतिः अभी हैं, अभी हैं।

श्री के.सी. त्यागीः हम दफा 144 भी तोड़ेंगे, हम long duration speech भी करेंगे, जो आपने allow नहीं की। It will be a long duration speech. सर, हम बाहर जिस भाषा का इस्तेमाल करते थे, अब उस असंसदीय भाषा का भी इस्तेमाल करेंगे, जिसको आपने यहां नहीं करने दिया।

सर, मैं आज कोई गंभीर बात नहीं कहना चाहता, चूंकि आज यहां उसका जवाब देने के लिए कोई मंत्री भी नहीं है। सन् 1977 में शरद यादव जी, मैं तथा मोहन सिंह जी, हमारे मित्र डी.पी. त्रिपाठी और नेता सदन जेल से छूट कर आए। हम में सबसे होशियार अरुण जेटली थे। इन्हें पता था कि political आदमी की जिन्दगी में उतार-चढ़व आते हैं। इन्होंने जेल से आने के बाद वकालत की और हम सब लोग राजनीति में लग गए। अब हमें उत्तर प्रदेश सरकार से जेल जाने के दस हजार रुपए मिलते हैं और हम आज के बाद एक्स एम.पी. हो जाएंगे, तो हमें एक्स एम.पी. की पेंशन के रूप में बीस हजार रुपए हर महीने मिलेंगे। आप दोस्ती के नाते कुछ तो फर्ज़ निभाओ। अरुण जी, हम आपसे इतनी तो उम्मीद करते हैं। अगर गुजरात में बाबूभाई पटेल की सरकार न रही होती, तो नरेन्द्र भाई भी जेल में होते, तो शायद हमारी तनख्वाह बढ़ गई होती। गुजरात के साथियों को जेल में जाने का मौका नहीं मिला था। मध्य प्रदेश की सरकार, राजस्थान की सरकार और उत्तर प्रदेश की सरकार ने, विशेष तौर से हमारे नेता मुलायम सिंह जी ने दस-दस हजार रुपए हम लोगों को दिए थे। अभी हमारी बेटी तुल्य बिटिया भी बताकर गई है कि कई परिवार भी बिगड़ गए थे, लोगों के धंधे छूट गए थे, लोगों को तकलीफें भी हुई थीं और आजकल हमारे मित्र हमारे ऊपर जो इल्ज़ाम लगा रहे हैं, इन्होंने भी हमें किसी जमाने में anti-national करार दिया था। मैं उन चीज़ों का यहां जिक्र नहीं करना चाहता। सर, मेरे साथ एक और हादास हुआ कि मेरा कार्यकाल पूरा नहीं था, यह केवल सवा तीन साल का ही था। जैसे आजकल फटाफट क्रिकेट होता है, उसी प्रकार मुझे रन भी बनाने थे और विकेट भी बचाना था और मैं इन दोनों के बीच में ही लटका रहा। यानी सवा तीन साल के कार्यकाल में मैंने कई बहसों में हिस्सा लिया और मैं अपने आपको बहुत गौरवान्वित महसूस करता हूं। मैं 9 अगस्त, 1974 को चौधरी चरण सिंह जी के नेतृत्व में एक निष्ठावान कार्यकर्ता की तरह भर्ती हुआ था, लेकिन अरुण जी, political arrogation मेरे अंदर विचारों की थी। मैं उसको political worker मानने को तैयार नहीं हूं, जो अपने विचार के लिए संघर्ष न करे, तकलीफ न उठाए, जेल न जाए, पिटाई न कराए और बहस न करे, ऐसा आदमी political worker नहीं। चाहे वह संघ का हो, चाहे सीपीएम का हो, चाहे गाँधी का सिपाही हो या लोहिया का सिपाही हो। मुझे निजी तौर पर आपकी विचारधारा से भी कोई विरोध नहीं

है, क्योंकि उसके लिए आप भी मेरे साथ जेल गए, इसीलिए हमारे बीच में ये बहस मुबाहिसे होते रहे। मुझे इसी दौरान और किन-किन लोगों के साथ काम करने का मौका मिला, मैं आपको बता रहा हूं कि वे वाइस प्रेसिडेंट बलराज मधोक साहब थे, बीजू पटनायक साहब थे, पीलू मोदी साहब - ये हमारे General Secretary थे। राजनारायण जी, कर्पूरी ठाकुर जी इतनी कम उम्र में ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः अब आप समाप्त करें।

श्री के.सी. त्यागीः मैं समाप्त कर रहा हूं। अगर आप इजाजत दें तो मैं एक शेर पढ़ दूँ?

श्री सभापतिः जरूर।

श्री के.सी. त्यागीः जी।

"ये माना कि चमन को न गुलज़ार कर सके हम,
कुछ ख़ार तो कम कर दिए, गुजरे जिधर से हम।"

SHRI JESUDASU SEELAM: Sir, I would like to say a few things. It is a great privilege to be here for the last 12 years. Sir, I have learnt a lot. I have really enriched myself and I have heard with great attention to the speakers with a lot of experience, with knowledge. Sir, I take this opportunity to thank my leader, hon. Congress President, Shrimati Sonia Gandhi, for giving me the opportunity for being here and also Dr. Manmohan Singh for giving me the opportunity to be one of the members of the Council of Ministers. At the same time, Sir, while getting myself enriched, I, also, in a humble way contributed my deliberations in the PAC, in the Energy Committee and, as a Member of various fora, I could contribute especially as the Secretary-General of the SC/ST MPs' forum and as the Secretary-General of the HIV/AIDS. Thanks to our Leader Oscarji for guiding me. I also express my gratefulness to the Leader of the Opposition, Deputy Leader and all senior leaders for guiding me on various occasions. Sir, I only feel that we could not contribute much on the issues of the State of Andhra Pradesh. Because of bifurcation we have been given a raw deal by this Government by not keeping up the promises, especially on the issue of 'Special Category' status. I hope this House will vote for the Private Members' Bill and then the Government will take cognizance of that.

Also, Sir, we have given to the hon. Prime Minister a Memorandum, signed by the Members of Parliament, while celebrating the 125th Anniversary of Dr. Ambedkar. All the political parties made a lot many promises. There are certain legislative measures initiated by UPA-I and UPA-II. They need to be taken forward. That includes reservation, promotion, reservation for SC/STs for codification and also for admission in educational institutions. Sir, we have a series of those legislations. Sir, 50 Members of Parliament have submitted a Memorandum to the Prime Minister. I hope the Prime Minister will

[Shri Jesudasu Seelam]

take cognizance of that, and we urge upon all the political parties to implement these provisions in up-keeping the values enshrined in the Constitution. We, as social activists, would like to remind that we will continue to work for the poor, we will continue to uphold the values. We will continue to be active in public life. Sir, once again, I take this opportunity to thank all my former colleagues in the bureaucracy and the leaders of all political parties for their immense affection, and, as I said, the hon. Chairman, the Deputy Chairman and the Secretariat. Sir, we know, we would like to conduct the proceedings, the deliberations in a dignified way, but we had to go to the well which we regret. As you know, under forced circumstances we had to do that. I hope the House would be able to function smoothly. Sir, I would like to draw the attention of the House to a very crucial matter where the poor are very much affected. It is the commercialisation of politics, the money being spent, the defections being encouraged and we are saying that the courts should not interfere much. But what are we doing as the Legislative, as the Executive and as other arms of democracy? I think we should deliberate on the issues of vital importance. I once again thank from the bottom of my heart Madam Sonia Gandhi and my Congress leaders for giving me this opportunity. I would also like to thank all those who advised me, guided me during my deliberations.

Sir, I hope the State of Andhra Pradesh would get the right deal and the people of Andhra Pradesh will not be let down by this Government. We request the Government to honour their commitments and do justice for the State of Andhra Pradesh. Thank you very much, Sir.

SHRI PYARIMOHAN MOHAPATRA (Odisha): Mr. Chairman, Sir, at the outset, I thank you for giving me this opportunity.

I will be failing in my duty if I do not thank my erstwhile party, Biju Janta Dal, and my erstwhile leader and the present adversary, Shri Naveen Patnaik, for sponsoring me twice to the Rajya Sabha.

Having said that and having heard everyone of my retiring colleagues, I must give vent to some of my frustration. I came in 2004 and we were part of NDA. The NDA was always walking out or going into the Well of the House. Going into the Well of the House was infrequent, but walking out was frequent. So, participation in any debate or discussion was nearly out of question for me over a year.

That was the fist big frustration. I said, 'What am I doing here, in this august House?'

The bigger frustration came when, as the Council of States, the interest of Odisha,

Jharkhand and Chhattisgarh States was not looked at by the UPA-I. It was the question of raising royalty which was roughly 45 paise per ton when mining lessees were making millions and each one of our poorer States were losing lakhs of crores of rupees. This House is the Council of States and all of us must support each other to see that the States must get their legitimate claims. I am sorry to say that support was lacking for these three poorer States during that particular period leading me — generally, I am a peaceful person — to say that an economic blockade of the Centre is necessary. It was in 2007. But, of course, my erstwhile leader and the present adversary, Shri Naveen Patnaik, ruled it out by saying that it is my personal view and not the view of the Government.

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

SHRI PYARIMOHAN MOHAPATRA: Sir, the highpoint of these twelve years was passage of the Women Reservation Bill which provides reservation for women in legislatures amid a lot of drama when four of the Members were taken out of the House and feel today that glorious thing which this House had done has not been legitimized by any of the three successive Governments. I don't know why. I know why, because we have broken -- instead of a nation -- and divided by castes; earlier by region and now by castes!

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

SHRI PYARIMOHAN MOHAPATRA: Sir, I will only conclude by saying that my friend, Mr. Tyagi, has now made up his mind. These twelve years I had noticed that humor is necessary to lighten and soften discussions. Today, I was congratulating Mr. Siddhu that since you have come some humor will return to the House. But, I did not know the potentiality of Shri K.C. Tyagi how much of humor he has in him; I have discovered it today.

I must thank you, the hon. Deputy Chairman, Secretary-General and the entire staff of the Rajya Sabha who made it possible for us to perform our duties.

Thank you.

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, I still have a list of ten speakers. Today is Friday. By well-established practice, we take a break on Friday till 2.30 P.M. So, I would suggest that we take a break now and come back unless the remaining ten people forgo their request to speak. ...*(Interruptions)*...

श्री के.सी. त्यागीः सर, अभी करवा दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

कई माननीय सदस्यः जी हां, सर, अभी करवा दीजिए।

श्री सभापतिः नहीं, अभी कैसे होगा? अभी नहीं हो सकता, क्योंकि 10 लोग और बोलने वाले हैं, and then the hon. Leader of the House has also to speak.

DR. T. SUBBARAMI REDDY: Sir, only a few of them are left. We will finish in half-an-hour or by 2'o clock.

MR. CHAIRMAN: No, no; it won't be finished in half-an-hour. The House is adjourned till 2.30 P.M.

The House then adjourned at sixteen-minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch, at
thirty minutes past two of the clock,

MR. CHAIRMAN *in the Chair.*

श्री सभापतिः श्री सालिम अन्सारी।

श्री सालिम अन्सारी (उत्तर प्रदेश): चेयरमैन साहब, सबसे पहले तो मैं अपनी पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्षा, बहन कुमारी मायावती जी का धन्यवाद अदा करूँगा, जिन्होंने मुझ जैसे एक गरीब परिवार के बेटे पर विश्वास करे के देश के सबसे उच्च सदन में मुझे भेजने का काम किया।

चेयरमैन सर, मेरे छः साल यहाँ बीते और इन छः सालों में मैंने यहाँ बहुत कुछ सीखा। दो साल से भारतीय जनता पार्टी के लोग उधर बैठे हैं, जब वे चार साल तक इधर थे, तो उनसे भी सीखा, फिर इधर वालों से भी सीखा। यहाँ तमाम जो अच्छी चीज़ें थीं, उनको मैंने ग्रहण किया। मैंने यह प्रयास किया, कोशिश की कि पूरे छः साल में इस हाउस में मैं 100 परसेंट हाज़िर रहा, एक दिन भी मैं गैरहाज़िर नहीं रहा, यह मेरी उपलब्धि रही। उस 100 परसेंट की हाज़िरी में मैंने तमाम उन बड़े नेताओं से बहुत कुछ सीखा और जो कुछ अनुभव लेकर यहाँ से मैं जा रहा हूँ, सीख कर जा रहा हूँ, तो लोग कह रहे हैं कि मेरी विदाई हो रही है या मेरा retirement है। अभी मैं retire होने की स्थिति में नहीं हूँ। मैं अपना कार्यकाल पूरा करके जा रहा हूँ, न कि मैं retire होकर जा रहा हूँ। जिस नेता ने मुझ पर विश्वास किया, उसको विश्वास दिलाते हुए मैं इस सदन से बाहर जाने के बाद उस उत्तर प्रदेश में, जहाँ साम्प्रदायिक शक्तियाँ ज़हर घोल रही हैं और माहौल खराब करने की कोशिश कर रही हैं, मैं कोशिश करूँगा, अपनी नेता की कयादत से यह मैसेज दूँगा किः

"न मुस्लिम का, न हिन्दू का,
यह हिन्दुस्तान सबका है।
अगर यह बात न समझ गई,
तो नुकसान सबका है।।"

तो मैं सारे दलों को, सारे लोगों को समझाने की और आपसी भाईचारा बनाने की कोशिश करूँगा। मैं बहुजन समाज पार्टी को बिलाँग करता हूँ। मान्यवर कांशीराम साहब ने हमारी पार्टी बनाई।

वे पढ़े-लिखे इंसान थे। उन्होंने इस पार्टी को बनाया और उनके इंतकाल के बाद माननीय बहन जी उस कयादत को लेकर जिस ढंग से गरीबों के आंसू पोंछने का उत्तर प्रदेश में काम करती हैं, उनकी कयादत में इंशा अल्लाह मैं काम करूँगा और उत्तर प्रदेश में उन तमाम गरीब, मज़लूमों, दलितों, अल्पसंख्यकों और समाज में तमाम जो दुखी लोग हैं, उनके उज्जवल भविष्य के लिए काम करता रहूँगा और इस देश का और प्रदेश का आपसी भाईचारा बनाने में मेरी अहम भूमिका रहेगी, मैं यह सीख कर इस सदन से जा रहा हूँ।

हमारे जो माननीय सदस्य रिटायर हो रहे हैं, उनके उज्जवल भविष्य की भी मैं कामना करता हूँ। चेयरमैन सर, आपका भी, प्रोफेसर कुरियन साहब का भी, हमारे सेक्रेटरी जनरल साहब का भी, जो बैठे हैं, उनके पूरे स्टाफ का भी कि हम लोग वैल में जाते थे, वहीं नारा लगाते थे, लेकिन जिस धैर्य का उन्होंने परिचय दिया कि कभी मुड़ कर नहीं देखा, तो मैं उनका भी शुक्रिया अदा करता हूँ।

सर, एक शेर के साथ मैं अपनी बात खत्म करूँगा किः

"यहाँ पर हमने गुज़ारे हैं कीमती लम्हे,
यहाँ पर हमने सीखा है मुहब्बतों के वसूल,
यहाँ पर हमको मिले हैं कई हसीन तोहफे,
किसी को तल्ख नवाई, किसी को प्यार के फूल।"

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात खत्म करता हूँ, शुक्रिया।

श्री राजपाल सैनी (उत्तर प्रदेश)ः सभापति जी, मैं सबसे पहले अपनी महान नेता, बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष, आयरन लेडी, बहन कुमारी मायावती जी का शुक्रिया अदा करता हूँ, आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने मुझ जैसे अति पिछड़े एक किसान के बेटे को भारत के इस सर्वोच्च सदन में भेजने का काम किया।

महोदय, वे एक ऐसी नेता हैं, जो हिन्दुस्तान में गरीबों को, दलितों की, पिछड़ों की और अल्पसंख्यकों की मसीहा हैं और जिस समाज को राजनीति में प्रतिनिधित्व नहीं मिलता, जो गरीब हैं, जो पिछड़े हैं और जो असहाय हैं उन लोगों को बहन कु0 मायावती जी राजनीति में हिस्सेदारी देती हैं, प्रतिनिधित्व देती हैं, उनके अंदर राजनीतिक चेतना जगाने का काम करती हैं। महोदय, मेरे छः साल इस सदन में बीते और छः साल में यहां के अनुभवी साथियों से, यहां के विद्वान मेम्बर्स से, यहां के संविधान के ज्ञाताओं से जो सीखने को मिला, उसका मैं बहुत ही अच्छा अनुभव करता हूं। अभी जो मेरी माननीया नेता ने यहां बोला था कि जो रिटायर हो रहे हैं उनकी जिम्मेदारी बनती है समाज को जोड़ने की, समाज में जाकर अपनी पार्टी के लिए काम करने की, तो हम उस काम को करेंगे। सभापति महोदय, मैं आपको भी धन्यवाद देता हूं और सबसे ज्यादा धन्यवाद देता हूं डिप्टी चेयरमैन प्रो0 कुरियन साहब को कि जब भी हमने किसी गरीब की, किसान की, मजदूर की बात उठाने का आग्रह किया तो उन्होंने हमें मौका दिया। लेकिन एक बात जरूर रही कि जो लोग इंग्लिश में बोलते हैं, उनके लिए घंटी थोड़ी देर में बजती है और जो हम लोग यहां बैठते हैं और हिन्दी में बोलते हैं, उनके लिए घंटी बहुत पहले बज जाती है, यह भी मेरा एक अनुभव रहा। मैं पुनः धन्यवाद देता हूं सभापति महोदय और उपसभापति महोदय को और यहां के स्टाफ को, यहां सेक्रेटरी जनरल साहब बैठे हैं, उनके साथ

[श्री राजपाल सैनी]

भी जो लोग बैठे हैं और ये जो बेचारे हमारे पीछे लोग खड़े रहते हैं, इन लोगों का हम लोगों को बहुत सहभाग मिला, सहयोग मिला। मैं एक बार फिर अपनी नेता बहन कु0 मायावती जी को धन्यवाद देते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं। धन्यवाद, जय भीम, जय भारत।

श्री सभापतिः थैंक्यू। आपने देखा होगा कि आपके लिए घंटी नहीं बजी।

SHRI AMBETH RAJAN (Uttar Pradesh): Thank you, hon. Chairman, Sir, for giving me this opportunity. At the outset, I express my heartfelt gratitude to my party leader, *Bahan* Kumari Mayawati, National President, Bahujan Samaj Party, for sending me to this august House as a Member for two terms.

Before coming to this House, I was involved in many social activities. After coming to this House, I got more opportunities; learned many things by hearing the views, suggestions, arguments of my colleagues from all parties and, especially, my party leader, *Bahan* Kumari Mayawati. I have had the chance of hearing the speeches of Kumari Mayawati in the Parliament on various topics like reservation in promotion, *Nirbhaya kand,* atrocities against Dalits, particularly, women, farmers' suicide, suicide of Dalit student Rohith Vemula in Hyderabad Central University, students' problem in Jawaharlal Nehru University. Apart from that, she made a historical speech on Commitment to India's Constitution as part of the 125th Birth Anniversary Celebrations of Dr. Ambedkar on 30th November, 2015.

Sir, I am proud of myself for being a Member of this House because this House saw many stalwarts like Dr. B.R. Ambedkar, the father of our Constitution and messiah of Downtrodden, and Kanshi Ramji, founder of BAMCEF, DS4 and Bahujan Samaj Party. He was organising Bahujan Samaj to politically stand on their own. So this is the concept of Kanshi Ramji and, presently, we are seeing our iron lady, Mayawatiji, as a Member of this House. As my National President, Kumari Mayawati, in the morning in her speech said, 'though I retire from this House, I will involve myself in the social activities under the guidance of *Bahan* Kumari Mayawati'.

I am also very thankful to hon. Chairman, hon. Deputy Chairman, Secretary-General and the other staff of Rajya Sabha Secretariat, who were very cooperative and helpful to me. Thank you, Sir.

MR. CHAIRMAN: Shri Vijay Jawaharlal Darda.

श्री विजय जवाहरलाल दर्डा (महाराष्ट्र)ः धन्यवाद चेयरमैन सर, समय की पाबंदी होने के कारण मैं आपसे केवल 5 मिनट ही मांग रहा हूं।

श्री सभापतिः नहीं, 5 मिनट तो नहीं।

श्री विजय जवाहरलाल दर्डाः मैं आपसे यही अनुमति चाहता हूं कि मेरा जो भाषण है, वह सभा पटल पर रखने की अनुमति दी जाए। अगर कुछ रह जाए, तो उसको सभा पटल पर रखने की अनुमति चाहता हूं।

श्री सभापतिः वह हमारा कस्टम नहीं है, इसको आप जानते हैं।

श्री विजय जवाहरलाल दर्डाः ठीक है। सर, आज सत्र के अवसान के साथ ही मैं और हमारे कुछ साथी अपने संसदीय सफर के अंतिम पड़ाव पर होंगे। मैं इसको सफर का अंत नहीं मानता हूं, क्योंकि राजनीतिक और सामाजिक सेवा के दौरान ऐसे पड़ाव आते हैं, जहां पर रुकना हमारी नियति नहीं है और होनी भी नहीं चाहिए। "चरैवेति चरैवेति" हमारा महामंत्र है और हमें हर हाल में चलते रहना है।

महोदय, मेरा 18 साल का संसदीय सफर रहा है, मेरा एक टर्म इंडिपेंडेंट था और दो टर्म्स मुझे कांग्रेस पार्टी ने दी हैं। इस खूबसूरत वक्त के लिए मैं सबसे पहले हमारी पार्टी की अध्यक्षा, श्रीमती सोनिया गांधी जी का हृदय से धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने विंदभ की माटी को देश के सर्वोच्च संसदीय मंच पर प्रतिनिधित्व करने का मौका दिया है। मैं राहुल जी का भी हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिनके युवा नेतृत्व ने पार्टी में नई ऊर्जा का संचार किया और जिनके कारण आज हम लोग एक नई दिशा की ओर जा रहे हैं। मैं हमारे दल के सभी मान्यवरों और नेताओं को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझ पर विश्वास जताया है।

सर, मुझे एक बात का खेद है कि जब मैं पहली बार 1998 में इस राज्य सभा में आया, उस वक्त मुझे पहली बार वॉच एण्ड वार्ड ने रोका और कहा कि आप तिरंगा झंडा लगा कर क्यों अंदर जा रहे हैं? यह लेबल है। मैं आपसे विनती कर रहा हूँ, हर वक्त मैं यह विनती करता हूँ कि अगर मैं हिन्दुस्तान का तिरंगा झंडा अपने सीने पर लगा कर आता हूँ, तो कृपा करके इसकी इजाजत दी जाए। यह मेरी ख्वाहिश रहेगी।

महोदय, मेरी हमेशा यह समझ रही है कि राष्ट्र की राजनीति और इसके निर्माण के लिए अलग-अलग ideology के लिए तो जगह है, लेकिन कभी भी व्यक्तिगत मतभेद या व्यक्तिगत आरोपों या प्रत्यारोपों वाली राजनीति नहीं होनी चाहिए। मैं समझता हूँ की सदन में उठने वाली हर आवाज़ राष्ट्र की आवाज़ है, राष्ट्रनिर्माण की एक कड़ी है, अगर यह कड़ी टूट जाए, तो जंजीर का महत्व खत्म हो जाएगा।

महोदय, हमारे देश के लोकतंत्र की धुरी secularism पर है। हमारा देश, हमारा संविधान हर जाति, मज़हब, स्त्री-पुरुष को बराबर का अधिकार देता है। देश की गवर्नेंस में मज़हब और जाति का कोई आधार नहीं होना चाहिए। इस देश के भविष्य की आधारशिला महात्मा गांधी जी, पंडित नेहरू जी, मौलाना आज़ाद साहब तथा डॉ. अम्बेडकर साहब जैसे लोगों ने secularism की ईंट पर रखी थी। हम अपने पड़ोसी देशों के हालात देख कर यह समझ सकते हैं कि मज़हबी राजनीति से जनता किस प्रकार तबाह हो सकती है।

महोदय, संसद में गतिरोध और व्यवधन हमारी संसदीय परंपरा के खिलाफ है, लेकिन आज गतिरोध भी लोकतंत्र की व्यवस्था का अंग बन जाता है, अगर विभिन्न दलों और विचारधाराओं के साथ

[श्री विजय जवाहरलाल दर्डा]

सामंजस्य न बिठाया जाए। हमारा लोकतंत्र collective wisdom के आधार पर चलना चाहिए। फिर भी गतिरोध संसद का महत्वपूर्ण समय नष्ट करता है और इसका मैसेज जनता में सही नहीं जाता है।

श्री सभापतिः थैंक यू।

श्री विजय जवाहरलाल दर्डाः सर, दो मिनट और दे दीजिए।

श्री सभापतिः नहीं।

श्री विजय जवाहरलाल दर्डाः सर, वाद-विवाद और बहस चलती रहनी चाहिए। आज देश में malnutrition, drought, बच्चों और महिलाओं तथा किसानों और climate change से जुड़े अनेक मुद्दे हैं। सबसे महत्वपूर्ण और चिंता की बात यह है कि आजकल राजनीतिक नेताओं की इमेज जनता में खराब होती जा रही है। लोग समझते हैं कि लेजिस्लेचर्स काम नहीं कर रहे हैं और हमारी युवा पीढ़ी बहुत ही संवेदनशील और जागरूक है। हमारी कोशिश यही होनी चाहिए कि हम सब मिल कर इस माहौल को बदलें और राष्ट्रीय लड़ाई राष्ट्रीय मंच पर होनी चाहिए, व्यक्तिगत तौर पर नहीं होनी चाहिए।

MR. CHAIRMAN: Thank you. Please conclude now.

श्री विजय जवाहरलाल दर्डाः महोदय, मैं जानता हूं कि समय की कमी है। अंत में मैं यह कहना चाहता हूँ कि कांग्रेस के नेताओं ने तेलंगाना राज्य का निर्माण तो अलग से किया है, किन्तु मैं आशा करता हूँ कि आने वाले समय में विदर्भ का निर्णय भी समय पर होगा।

अंत में मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि यहां पर उपस्थित सभी मान्यवर, विशेष रूप से चेयरमैन साहब, डिप्टी चेयरमैन साहब, माननीय लीडर ऑफ दि हाउस, अरुण जेटली जी, लीडर ऑफ दि अपोजिशन, गुलाम नबी आज़ाद साहब और साथ ही एलजी साहब तथा तमाम अधिकारी, जिन सब लोगों ने हमें सहयोग दिया, जिनका guidance मिला, उनके प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

अंत में मैं इतना ही कहना चाहूंगा किः

"मुझको चलने दो अकेला है अभी मेरा सफर
रास्ता रोका गया तो कारवां हो जाऊँगा।"

धन्यवाद।

डा. विजयलक्ष्मी साधौ (मध्य प्रदेश)ः सर, इस सदन के अंदर एक मिनी भारत बैठा हुआ है। कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक के यहाँ माननीय सदस्य बैठे हुए हैं। हमारे लिए राज्य सभा की सदस्यता लेना ही अपने आप में एक सम्मान की बात है। मैं जब राज्य सभा की सदस्य चुनी गई, तो यह सोचकर बहुत रोमांचित हो रही थी कि मुझे उस सदन में जाने का मौका मिल रहा है, जिस सदन के अंदर वे हस्तियाँ बैठती थीं, जिन्होंने आज़ादी की लड़ाई में अपनी भूमिका का निर्वहन किया। जिन्होंने सिर पर कफ़न बाँधकर इस देश को आज़ादी दिलाई और जिन्होंने इस समाज के अंदर जर्जर भारत के नवनिर्माण की परिकल्पना की, उसको साकार रूप देने का प्रयास किया, संविधान की रचना की, ऐसे

सदन के अंदर मुझे जाने का अवसर मिलेगा, वहाँ बैठने का अवसर मिलेगा, अपनी दो बातें कहने का अवसर मिलेगा। सर, मैं यह सोचकर बहुत रोमांचित थी कि हमारे जो सीनियर सदस्यगण हैं, मुझे उनके अनुभवों और उनकी बातों को जानने का अनुभव प्राप्त होगा।

सर, मैं यहाँ पर अपने पापा का भी नाम लेना चाहूँगी। स्वर्गीय सीताराम जी साधौ मेरे फादर थे। वे भी कहीं न कहीं आज़ादी की लड़ाई में एक छोटा-सा नींव का पत्थर थे। आज़ादी के नव-निर्माण में भी उनकी भागीदारी थी। उन्होंने सन् 1952 का चुनाव लड़ा था और विधायक बने थे। महेश्वर विधान सभा, जो कि एक हिस्टोरिकल प्लेस है और अहिल्याबाई होल्कर और माँ नर्मदा की नगरी है। वहाँ से उनको लगातार चुनकर आने का अवसर मिला और उन्हीं की बदौलत आज मुझे इस सदन में ऊँचाईयाँ मिलीं।

माननीय सभापति महोदय, आप सब यह जानते हैं कि इंटरनल पोलिटिक्स आदि होती है। मेरे पिताश्री एक सिटिंग एमएलए थे, उसके बावजूद मुझे विधान सभा का चुनाव लड़ने का मौका मिला। उस वक्त मैंने मेडिकल की पढ़ाई का बस एग्जाम दिया था और मुझे विधान सभा का टिकट मिला। मैं स्वर्गीय राजीव गाँधी जी को याद करना चाहूँगी कि उन्होंने यंगस्टर्स को मौका दिया, महिलाओं को मौका दिया और मुझे विधान सभा का चुनाव लड़ाकर विधान सभा में प्रवेश करने का एक मौका दिया। मैंने प्रयास किया कि मैं अपने क्षेत्र की जनता का वहाँ पर प्रतिनिधित्व करती रहूँ और लगातार चार बार मैंने अपने क्षेत्र का विधान सभा में प्रतिनिधित्व किया। आदरणीय वोरा जी यहाँ नहीं हैं, उन्होंने अपने मुख्य मंत्रित्वकाल में मुझे संसदीय सचिव के रूप में पहली बार काम करने का मौका दिया। आदरणीय दिग्विजय सिंह जी ने मुझे 10 साल तक कैबिनेट मंत्री के रूप में विभिन्न विभागों की जिम्मेदारी सम्भालने का मौका दिया और काम करने की एक ताकत दी।

MR. CHAIRMAN: Thank you.

डा. विजयलक्ष्मी साधौः सर, एक मिनट। यहाँ बहुत कम महिलाएँ बोली हैं और यहाँ भी उनकी उपस्थिति बहुत कम है। मैं स्वर्गीय राजीव जी का इस बात के लिए धन्यवाद करती हूँ कि उन्होंने जब मुझे एमएलए बनाया था, तो उस समय 320 लोगों की विधान सभा में हम 32 महिलाएँ चुनकर आई थीं, जो एक रिकॉर्ड था। माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे भी यह उम्मीद करूँगी कि मुझे एक-दो मिनट ज्यादा मिलें, क्योंकि यहाँ पर कम लोग ही बोले हैं।

मैं सोनिया जी और राहुल जी का भी धन्यवाद करूँगी। मैं मनमोहन सिंह जी का धन्यवाद करूँगी और हमारे जितने भी सीनियर लीडर्स हैं, उनका धन्यवाद करूँगी। माननीय सभापति महोदय, मैं एक चुनी हुई विधायक थी और जब मात्र मुझे डेढ़ साल हुआ था और साढ़े तीन साल बचे थे, उसके बावजूद सोनिया जी ने मुझे फोन किया कि विजयलक्ष्मी, तुम्हें राज्य सभा में आना है। वह मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। मैं सोचती थी कि मैं विधायक हूँ, अपोज़िशन में बैठी हूं और वहाँ से बुलाकर अगर मुझे केन्द्रीय राजनीति में मौका मिलेगा, तो वह सिर्फ और सिर्फ हमारे नेता ही कर सकते हैं और उन्होंने मुझे वह मौका दिया।

माननीय सभापति महोदय, बहुत सारे लोगों ने यहाँ पर "भूतपूर्व" बोला। राजनीति में कोई भूतपूर्व नहीं होता। अभूतपूर्व काम करके फिर वतमान हो जाते हैं और लोग राजनीति के अंदर आ जाते हैं।

MR. CHAIRMAN: Thank you.

डा. विजयलक्ष्मी साधौः माननीय सभापति महोदय, इसी सत्र के पहले भाग में एक बहुत सम्मानित सदस्य के मुँह से "भूले-बिसरे गीत" की बात आई थी। उस समय जब आदरणीय आनन्द शर्मा जी अपना भाषाण दे रहे थे, तो एक शब्द, "भूले-बिसरे गीत" आया था, हालाँकि वह नहीं आना चाहिए था। लेकिन जब वह आ गया तो मैं उसके बारे में बोलना चाहती हूँ कि "भूले-बिसरे गीत" सदाबहार रहते हैं।

MR. CHAIRMAN: Thank you very much. अब आप समाप्त कीजिए।

डा. विजयलक्ष्मी साधौः सभापति जी, मैं आपका धन्यवाद करती हूँ। मैं उपसभापति महोदय का धन्यवाद करती हूँ। मैं सेक्रेटरी जनरल महोदय का धन्यवाद करती हूँ। मैं राज्य सभा के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का धन्यवाद करती हूँ। हमारे पीछे जो बैठे हैं, जो हमेशा हमें सहयोग करते हैं, उन सभी का मैं धन्यवाद करती हूँ। अंत में, मैं सभी माननीय सदस्यों का धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने दलगत राजनीति से ऊपर उठकर मुझे सहयोग मिला। मैं पक्ष में भी रही हूँ और विपक्ष में भी रही हूँ। कभी गलतियाँ भी हो जाती हैं और कभी नारे भी ज़रा जोर से लगा दिए जाते हैं, तो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अगर किसी को तकलीफ हो तो मैं ह्रदय से माफी चाहती हूँ। मैं आप सबके सहयोग की बहुत-बहुत आभारी हूँ, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अविनाश पांडे (महाराष्ट्र)ः सर, सबसे पहले तो मैं कांग्रेस पार्टी की हमारी सर्वोच्च नेता श्रीमती सोनिया गांधी जी का एवं हमारे युवा नेता माननीय राहुल गांधी जी का तहे दिल से आभार मानना चाहूंगा, अपनी कृतज्ञता अर्पित करना चाहूंगा कि उनके मार्गदर्शन में मुझ जैसा एक सामान्य कार्यकर्ता को देश के इस सर्वोच्च सदन में आने का और यहां के इन सभी महानुभावों के बीच में बैठकर सुनने का, समझने का और सीखने का अवसर प्रदान किया।

सर, मैं एक बहुत ही सामान्य परिवार से आता हूँ। मैंने 1975 के दौरान छात्र आंदोलन में भाग लिया और 1977-78 में नागपुर विद्यापीठ छात्र संघ का मैं सचिव चुना गया था। तब तक राजनीति में आगे क्या होगा, इसका मुझे अंदाज नहीं था, लेकिन उसी दौरान माननीया श्रीमती इंदिरा गांधी जी जब सेवा ग्राम दौरे पर आईं, तो मैं काफी प्रभावित हुआ। हमारे मित्र, सखा, बंधु डा. श्रीकांत जिचकर जी, जो कि इस सभा के भी सदस्य रह चुके हैं, आज दिवंगत हैं, लेकिन उनका स्मरण मैं निश्चित रूप से करना चाहूंगा कि उनके साथ छात्र आंदोलन में, यहां यूनिवर्सिटी के साथ-साथ पूरे प्रदेश में, हम लोगों ने एक कोशिश की कि सुशिक्षित, अच्छे विचार के, अच्छे छात्र नेताओं को हम जोड़ें, ताकि समाज को, देश को, एक अच्छा नेतृत्व दे सकें।

सर, छात्र आंदोलन में सहभागी होते हुए अध्ययन की तरफ हम सब लोगों का रुझान था और हम सब लोगों का नियम था, जब तक छात्र राजनीति करेंगे, अपने अध्ययन को चालू रखेंगे, कंटिन्यू रखेंगे। उस दौरान मैंने बी.कॉम के साथ-साथ एम.ए. (इकोनॉमिक्स), एम.ए. (एडमिनिस्ट्रेशन), बिजनेस मैनेजमेंट, जर्नलिज्म की डिग्री हासिल की और साथ-साथ पोलिटिकल साइंस और लॉ का भी अध्ययन किया।

सर, मैं आपको बताना चाहूंगा कि मैं 1985 में पहली बार विधान सभा का सदस्य बना और उसी के साथ-साथ आज पार्टी में अलग-अलग जिम्मेदारियाँ संभालते हुए, चाहे वह यूथ कांग्रेस की हो, प्रदेश अध्यक्ष की हो, एनएसयूआई प्रदेश अध्यक्ष की हो और ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की ओर से अलग-अलग जिम्मेदारियों के तहत हिन्दुस्तान के अलग-अलग क्षेत्रों में मुझे सेवा करने का मौका मिला। मैं आज के इस अवसर पर विशेष रूप से राजीव गांधी जी का स्मरण करना चाहूंगा, जिन्होंने मुझे 1985 में पहली बार विधान सभा का टिकट देकर सबसे छोटी उम्र का विधायक बनने का मौका दिया।

सर, आज के इस अवसर पर मैं आपसे इतना ही कहना चाहूंगा कि जो अनुभव मुझे इस सदन में आकर मिला, वह मेरे जीवन की एक बहुत बड़ी पूंजी है, जो आगे आने वाले जीवन में, राजनीतिक जीवन में सहायक और मार्गदर्शक साबित होगी।

सर, आज के इस अवसर पर विशेष रूप से मैं उल्लेख करना चाहूंगा अपने माता-पिता का, जिन्होंने मुझे संस्कार दिए, मेरा मार्गदर्शन किया। साथ ही मेरे गुरु पिता राष्ट्रकवि प्रदीप जी का, जिनके मार्गदर्शन में मुझे जीवन के मूल्यों और जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने और सीखने का मौका प्राप्त हुआ।

सर, आज के इस अवसर पर मैं अपने उन सभी नेताओं का, जिनके साथ मुझे काम करने का मौका मिला, ऐसे सभी नेताओं का तहेदिल से आभार मानता हूं और विशेष रूप से आपका और हमारे माननीय डिप्टी चेयरमैन साहब का, सेक्रेटरी जनरल साहब का और साथ ही साथ हमारे इस सेक्रेटेरिएट में काम करने वाले जो हमारे साथीगण हैं, विशेष रूप से हमारे चैम्बर अटेंडेंट हैं, नोटिस ऑफिस, टेबल ऑफिस का हमारा सभी स्टाफ, पार्लियामेंटरी लाइब्रेरी, प्रैस, मीडिया के सभी प्रतिनिधि एवं राज्य सभा टी.वी., इन सभी का मैं तहेदिल से आभार प्रकट करता हूं। सर, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री गुलाम रसूल बलियावी (बिहार)ः सभापति महोदय, मैं सबसे पहले आपका, वाइस चेयरमैन साहब का और सदन के सभी दलों के, सभी बुजुर्ग लीडरों का आभार प्रकट करता हूं, जिन्होंने मुझे बहुत कुछ सीखने का मौका दिया। उससे पहले मैं, अपने लीडर, बिहार के मुख्य मंत्री मोहतरम जनाब नीतीश कुमार साहब का और अपने लीडर जिन्होंने बहुत कुछ सिखाया, आदरणीय श्री शरद यादव जी का और पूरी पार्टी का शुक्रगुज़ार हूँ। मैंने अपना सफर गांव से शुरू किया था, मदरसे से मेरी यात्रा शुरू हुई थी और अखबारों की सुर्खियों में और हालात के दर्पण में जिस मदरसे के बारे में लोगों की कई तरह की राय रही है, हमें उस आलिम से बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। जिसने मुल्क की आज़ादी के लिए जिहाद का फ़तवा भी दिया था और 'इन्क्लाब ज़िन्दाबाद' का नारा भी दिया था, नाम अल्लामा फज़ल हक ख़ेराबादी था। उस मदरसे की चटाई से... मैं अपने आदरणीय नेता नीतीश कुमार का शुक्रगुज़ार हूँ कि मुल्क की उस जम्हूरियत, सबसे बड़ी अदालत को देखने और समझने का एक मौका दिया। मुल्क में इससे बड़ी कोई अदालत नहीं है, जहां मज़हब, बिरादरी, धर्म व जाति से ऊपर उठकर सारे हिन्दुस्तानियों के मुस्तक़बिल के बारे में सोचा जाता है।

सर, बिलाशुबहा हमने भी कुछ ज्यादा जोर से नारे लगाए होंगे और हमने भी किसी न किसी का

[श्री गुलाम रसूल बलियावी]

दिल दुखाया होगा। मैं बड़े अदब के साथ माज़रत चाहूंगा और यह सही है कि लोग आते हैं, जाने के लिए, लेकिन मैं बहुत कुछ सीख कर जा रहा हूं, फिर दोबारा वापस आने के लिए, इसलिए कि हिम्मत हार जाना, मेरे बुजुर्गों ने नहीं सिखाया है।

सर, यहाँ Leader of the House भी बैठे हुए हैं, यहां बहुत से कानून बनते हैं। कभी खुशी होती थी और कभी गम भी होता था। जब गरीबों के मुस्तकबिल की बात आती थी, तो लगता था कि मैं गरीब के घर पैदा हुआ हूं शायद इस अदालत से उन गरीबों के होंठों तक मुस्कुराहट पहुंच जाए। जब गरीबों के मुस्तकबिल को कुचलने के लिए राजनीति होती थी, उस वक्त धनवानों के महलों पर पत्थर मारने को जी चाहता था कि आखिर क्यों नहीं इनको मिसमार कर दिया जाए।

सर, मैं इसी के साथ यह भी चाहूंगा, यहां Leader of the House भी हैं और Opposition के Deputy Leader भी हैं, हमारे आदरणीय शरद जी भी हैं और प्रोफेसर साहब भी हैं, यहां सभी लीडर्स हैं। सर, दो बड़े सुलगते हुए मसायल हैं। मैं गांवों में कभी-कभी देखता हूं कि जो हाथ दुआओं के लिए उठा करते थे, वे हाथ कभी भीख मांगने के लिए भी उठते हैं। काश, उन भीख मांगने वाले हाथों को यह सदन, यह हाउस ज़माने के सामने फैलाने के लायक नहीं रहने देता और मुल्क की गरीबी दूर हो जाती, तो मैं समझता हूं कि जिंदगी की हर सांस वसूल हो जाती।

सर, इसी के साथ बस आखिरी लफ़्ज़ है। हमारे मुल्क की सरहदों की सुरक्षा और हिफ़ाजत के लिए हर हिन्दुस्तानी अपनी जिंदगी की आखिरी सांस न्यौछावर और निसार करके फख्र महसूस करता है। मैं तो अपने उन पूर्वजों को सैल्यूट और सलाम करता हूं, जिन्होंने हमें जम्हूरियत की सबसे बड़ी अदालत लोक सभा और राज्य सभा दी है। सर, हमें अपने हिन्दुस्तानी होने पर फख्र है और डॉ. इकबाल को हम हर लम्हे याद करते हैं,

'सारे जहां से अच्छा हिन्दोसतां हमारा'।
हम बुलबुले हैं इसकी, ये गुलसितां हमारा'।

लेकिन अगर एक मुद्दे पर पूरा सदन एकत्र हो जाए, तो मैं समझता हूं कि रोजाना जो आंसू, दामनों और आंचलों में सूख रहे हैं, शायद वे न सूखने पाएं। जो बेकसूर लोग जेल की सलाखों में, मुल्क दुश्मनी के नाम पर, दहशतगर्दी के नाम पर बंद हैं, उनके लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट बना दी जाए। अगर वे मुजरिम हैं, तो उनको सूलियों पर लटका दिया जाए। उनके जनाज़े की नमाज़ भी नहीं पढ़ेंगे और अगर बेकसूर हैं, तो उन्हें बाइज्जत बरी करके, उनकी माताओं के आंचल के हवाले कर दिया जाए। ये मादरे वतन की पूंजी है, यह हिन्दुस्तान की अज़मत है, यह मादरे वतन का असासा है, जो कल हमारी सरहदों पर काम आएगा। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। हमारे लीडर नीतीश कुमार जी का, शरद यादव जी का, एक मर्तबा फिर उन सारी धरोहरों का, जहां कर्पूरी ठाकुर, जय प्रकाश, आदरणीय महात्मा गांधी और मौलाना अबुल कलाम जैसे लोग हुए हैं, जो एक लकीर खींचने वाले थे, मैं भी उस लकीर के पीछे अपनी जिंदगी की आखिरी सांस चलने का अहद करके फिर वापस आने की आपसे इजाज़त लूंगा, बहुत-बहुत शुक्रिया। हिन्दुस्तान ज़िदाबाद, हमारे देश का संविधान ज़िदाबाद।

†[**جناب غلام رسول بلیاوی (بہار):** سبھاپتی مہودے، میں سب سے پہلے آپ کا، وائس چئیرمین صاحب کا اور سدن کے سبھی دلوں کے، سبھی بزرگ لیڈروں کا آبھار پرکٹ کرتا ہوں، جنہوں نے مجھے بہت کچھ سیکھنے کا موقع دیا۔ اس سے پہلے میں، اپنے لیڈر، بہار کے مکھیہ منتری محترم جناب نتیش کمار صاحب کا اور اپنے لیڈر جنہوں نے بہت کچھ سکھایا، آدرنیئے شری شرد یادو جی کا اور پوری پارٹی کا شکرگزار ہوں۔

میں نے اپنا سفر گاؤں سے شروع کیا تھا، مدرسے سے میرا سفر شروع ہوا تھا اور اخباروں کی سرخیوں میں اور حالات کے درپن میں جس مدرسے کے بارے میں میں لوگوں کی کئی طرح کی رائے رہی ہیں، ہمیں اس عالم سے بہت کچھ سیکھنے کا موقع ملا۔ جس نے ملک کی آزادی کے لئے جہاد کا فتوی بھی دیا تھا اور 'انقلاب زندہ آباد' کا نعرہ بھی دیا تھا، نام علّامہ فضل الحق خیرآبادی تھا۔

اس مدرسے کی چٹائی۔ میں اپنے آدرنئے نیتا نتیش کمار کا شکر گزار ہوں کہ ملک کی اس جمہوریت، سب سے بڑی عدالت کو دیکھنے اور سمجھنے کا موقع دیا۔ ملک میں اس سے بڑی کوئی عدالت نہیں ہے، جہاں مذہب، برادری، دھرم و جاتی سے اوپر اٹھ کر سارے ہندوستانیوں کے مستقبل کے بارے میں سوچا جاتا ہے۔

سر، بلا شبہ ہم نے بھی کچھ زیادہ زور سے نعرے لگائے ہوں گے اور ہم نے بھی کسی نہ کسی کا دل دکھایا ہوگا۔ میں بڑے ادب کے ساتھ معذرت چاہوں گا اور یہ صحیح ہے کہ لوگ آتے ہیں جانے کے لئے، لیکن میں بہت کچھ سیکھ کر جا رہا ہوں، پھر دوبارہ واپس آنے کے لئے، اس لئے کہ ہمّت ہار جانا، میرے بزرگوں نے نہیں سکھایا ہے۔

سر، یہاں لیڈر آف دی ہاؤس بھی بیٹھے ہوئے ہیں، یہاں بہت سے قانون بنتے ہیں۔ کبھی خوشی ہوتی تھی اور کبھی غم بھی ہوتا تھا۔ جب غریبوں کے مستقبل

†Transliteration in Urdu Script.

[श्री गुलाम रसूल बलियावी]

کی بات آتی تھی، تو لگتا تھا کہ میں غریب کے گھر پیدا ہوا ہوں شاید اس عدالت سے ان غریب کے ہونٹوں تک مسکراہٹ پہنچ جائے۔ جب غریبوں کے مستقبل کو کچلنے کے لئے سیاست ہوتی تھی، اس وقت امیروں کے محلوں پر پتّھر مارے کو جی چاہتا تھا کہ آخر کیوں نہیں ان کو مسمار کر دیا جائے۔

سر، میں اسی کے ساتھہ یہ بھی چاہوں گا، یہاں لیڈر آف دی ہاؤس بھی ہیں اور اپوزیشن کے ڈپٹی لیڈر بھی ہیں، ہمارے آدرنئے شرد جی بھی ہیں اور پروفیسر صاحب بھی ہیں، یہاں سبھی لیڈرس ہیں۔ سر، دو بڑے سلگتے ہوئے مسائل ہیں۔ میں گاؤں میں کبھی کبھی دیکھتا ہوں کہ جو ہاتھہ دعاؤں کے لئے اٹھا کرتے تھے، وہ ہاتھہ کبھی بھیک مانگنے کے لئے بھی اٹھتے ہیں۔ کاش، ان بھیک مانگنے والوں کو یہ سدن، یہ ہاؤس زمانے کے سامنے پھیلانے کے لائق نہیں رہنے دیتا اور ملک کی غریبی دور ہو جاتی، تو میں سمجھتا کہ زندگی کی ہر سانس وصول ہو جاتی۔

سر، اسی کے ساتھہ بس آخری لفظ ہے۔ ہمارے ملک کی سرحدوں کی سرکشا اور حفاظت کے لئے ہر ہندوستانی اپنی زندگی کی آخری سانس نچھاور اور نثار کرکے فخر محسوس کرتا ہے۔ میں تو اپنے ان آباؤاجداد کو سلیوٹ اور سلام کرتا ہوں، جنہوں نے ہمیں جمہوریت کی سب سے بڑی عدالت لوک سبھا اور راجیہ سبھا دی ہے۔ سر، ہمیں اپنے ہندوستانی ہونے کا فخر ہے اور ڈاکٹر اقبال کو ہم ہر لمحے یاد کرتے ہیں،

سارے جہاں سے اچھا ہندوستاں ہمارا

ہم بلبلیں ہیں اس کی، یہ گلستاں ہمارا

لیکن اگر ایک مدعے پر پورا سدن ایکترت ہوجائے، تو میں سمجھتا ہوں کہ روزانہ جو آنسو، دامنوں اور آنچلوں میں سوکھ رہے ہیں، شاید وہ نہ سوکھنے پائیں۔ جو بے

3.00 P.M.

قصور لوگ جیل کی سلاخوں میں، ملک دشمنی کے نام پر، دہشت گردی کے نام پر بند ہیں، ان کے لیے فاسٹ ٹریک کورٹ بنادی جائے۔ اگر وہ مجرم ہیں، تو ان کو سولیوں پر لٹکا دیا جائے۔ ان کے جنازے کی نماز بھی نہیں پڑھیں گے اور اگر بے قصور ہیں، تو انہیں باعزت بری کرکے، ان کی ماتاؤں کے آنچل کے حوالے کردیا جائے۔ یہ مادر وطن کی پونجی ہے ہندستان کی عظمت ہے، یہ مادر وطن کا اثاثہ ہے، جو کل ہماری سرحدوں پر کام آئیگا۔ آپ کا بہت بہت شکریہ۔ ہمارے لیڈر نتیش کمار جی کا، شرد یادو جی کا، ایک مرتبہ پھر سے ان ساری دھروہروں کا، جہاں کرپوری ٹھاکر، جے پرکاش، آدرنئیے مہاتما گاندھی اور مولانا ابوالکلام جیسے لوگ ہوئے ہیں، جو ایک لکیر کھینچنے والے تھے، میں بھی اس لکیر کے پیچھے اپنی زندگی کی آخری سانس چلنے کا عہد کرکے پھر واپس آنے کی آپ سے اجازت لونگا، بہت بہت شکریہ۔ ہندستان زندہ باد، ہمارے دیش کا سمودھان زندہ باد۔

[(ختم شد)

श्री नंद कुमार साय (छत्तीसगढ़): माननीय सभापति महोदय, मैं जब राज्य सभा में आया, इससे पहले मैं लोक सभा में था, तो यहाँ आकर बहुत अच्छा लगा। पूरे हिंदुस्तान देश से, अलग-अलग जगहों से आये लोगों ने, हमारे निवर्तमान संसद सदस्यों ने जैसा कहा, मुझे वैसा ही लगा। मुझे अलग-अलग जगहों से आए लोगों के अलग-अलग विचार, उनके विषय, उनकी प्रस्तुति, सभी कुछ सुनकर बहुत अच्छा लगा। माननीय अरुण जेटली जी उस समय भी हमारे नेता थे, आज भी हैं। हमें माननीय अरुण जेटली जी के नेतृत्व में बहुत सारी बातें सीखने को मिलीं। मैं केवल ऐसा सोचता हूं कि सारे लोग मिलकर पूरे हिंदुस्तान को और शक्तिशाली समृद्धशाली देश कैसे बनाएं, यह सबसे बड़ा सवाल है। राजनीति अपनी जगह होगी, लेकिन यह सबसे बड़ा सवाल है। मैं देखता हूँ कि हमारा ओडिशा गरीब है, बिहार गरीब है और छत्तीसगढ़ भी गरीब है। मैंने इतिहास में पढ़ा है, हमारे पूर्वजों ने, ऋषि-मुनियों ने लिखा है कि एक ज़माना आएगा जब सारा देश खड़ा होगा। उन्होंने पूरे देश की गरीबी से, अज्ञानता से, निरक्षरता से लड़कर एक महान् देश बनाने का आह्वान किया। मैं उनके संकल्प को आपके सामने दोहराना चाहता हूं।

"बिहार जागे, उत्कल जागे
बिहार जागे, उत्कल जागे, जागे बंग महान।"

हमारा जो पूरा सांस्कृतिक भारत था, वह भी दुखी है।

"बिहार जागे, उत्कल जागे, जागे बंग महान
कर्नाटक, गुजरात, मराठा, सिंध, बलूचिस्तान
जगा दो भारत को भगवान।

[श्री नंद कुमार साय]

कश्मीर, पंजाब, अवध-ब्रज
प्रिय नेपाल, भूटान।
महाकोशल मालव उठ बैठे, गरजे राजस्थान
जगा दो भारत को भगवान।"

यह सारे देश को जगाने का काम है, हम सब मिलकर इस काम को करें। हमारे इस महान देश के प्रधान मंत्री जी चाहते हैं कि हमारा पूरा मुल्क, जो कहीं से भी अलग है, वह मजबूत हो, ताकतवर हो। हम उनके पथ पर चलकर ठीक कार्य करेंगे।

माननीय सभापति जी, यह आना-जाना तो होता रहेगा, लेकिन हमें एक बात का बहुत अफ़सोस है कि हमारे जो डिप्टी चेयरमैन सर हैं, हमें उनकी हिंदी सुनने में दिक्कत होगी। वे बहुत अच्छी हिंदी बोलते हैं। हम उनकी हिंदी सुन नहीं पाएंगे, यह आना-जाना तो लगा रहेगा।

"यह साँझ-ऊषा का अंगन,
आलिंगन विरह-मिलन का।
चिर हास-अश्रुमय आनन,
रे इस मानव-जीवन का।"

हम आते-जाते रहेंगे, लेकिन देश के लिए काम आते रहेंगे। हम चाहे यहाँ रहें, चाहे बाहर रहें या कहीं भी रहें, लेकिन देश के लिए काम करते रहेंगे। मैं अंत में महाकवि श्री जयशंकर प्रसाद जी की कविता की पंक्ति पढ़कर अपनी बात समाप्त करूंगा और आपके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करूंगा।

हमने अरुण जी से बहुत कुछ सीखा है। हम प्रधान मंत्री जी के प्रेरणादायक मार्ग पर चलकर देश को शक्तिशाली बनाने की कोशिश कर रहे हैं। हमारे डिप्टी चेयरमैन साहब का बहुत-बहुत धन्यवाद, सभी सदस्यों ने बहुत जानकारी दी और बहुत ज्ञान दिया। जब मैं यहाँ आया, तो यहाँ ज्ञान का ख़जाना था। यहाँ लिखा है-

"सत्यम् वद धर्मं चर।
एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति।"

संस्कृत में ज्ञान है, विज्ञान भी है। मैं ऐसा मानता हूं कि वह आगे चलकर, इस देश और दुनिया को आगे बढ़ाने के लिए फिर से निखकर आएगा। यह महान देश, जिसके नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए दुनिया से लोग आए थे, हम उस महान देश को फिर से खड़ा करेंगे और साथ मिलकर दुनिया का सिरमौर राष्ट्र बनाएंगे। मैं यह निवेदन करके अपनी बात समाप्त करूंगा कि-

"वही है देश, वही है रक्त,
वही साहस है, वैसा ज्ञान।
वही है शक्ति, वही है शान्ति,
वही हम दिव्य आर्य-संतान।
जियें तो सदा इसी के लिए
यही अभिमान रहे यह हर्ष।
निछावर कर दें हम सर्वस्व
हमारा प्यारा भारतवर्ष।"

सभापति जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, सबको नमस्कार वंदे मातरम्।

SHRI JAIRAM RAMESH (Andhra Pradesh): Thank you, Mr. Chairman, Sir.

Sir, I have been the beneficiary of a confluence of circumstances. From the mid '80s to the mid '90s, I sat in the Official Gallery, but from 2004, thanks to the Congress President and the Chairperson of the UPA, I have had the benefit of being a Member of this House, for a long time in those benches, and for the last two years, in these benches.

Sir, in the last 12 years, I have had the opportunity, the privilege, again, thanks to the Chairperson of the UPA and the Prime Minister, of having been associated with nine historic legislations that were passed in the Lok Sabha and the Rajya Sabha — The Right to Information Act, The Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act, The Forest Rights Act, The Right to Education Act, The National Green Tribunal Act, The National Food Security Act, The Land Acquisition Act, 2013, The Manual Scavenging Abolition Act, and, finally, The Andhra Pradesh Reorganization Act.

It is, Sir, a record which I feel that I can take some satisfaction in having participated in these debates. There were also numerous debates in this House particularly on climate change in which my position has been criticized and bitterly denounced by the current Leader of the House. But I am so happy that the position that I took in Copenhagen and Cancun with the support of the Prime Minister is now part of official Government policy. So, after all, Sir, to quote the Leader of the House to himself, "Where you stand does depend on where you sit". Sir, as I leave, I remember Shri Bhairon Singh Shekhawat who eased my entry into the Rajya Sabha; I remember Shri Pramod Mahajan who should be a role model for Mr. Venkaiah Naidu in the manner in which he kept alive and kept together different political parties; I remember two MPs, Comrade Dipankar Mukherjee and Comrade Rajeeve, who came to the House and they were, in many ways, ideal parliamentarians. I remember Prof. Kurien; how can I ever forget 'Vijaylaxmi Sadhu', 'Dr. Rajani Patil' and 'Pallavi Govardhan Reddy'. He kept saying this all the time and we kept correcting him. But it didn't register on him. I am glad that my association with him will, of course, continue because we will be party mates. Sir, the Leader of the House and I have been sparring partners, and I have to say that we were taught to spin khadi by Mahatma Gandhi. But the Leader of the House spins facts, and he is a master spinner of facts. And all I can say is that he combines in him the guile of Bedi, the flight of Prasanna, the length of Venkataraghavan and the shooters of Chandrasekhar. There have been very few spinners like him. But my advice and request to him is, at some point of time, stop spinning and start governing. Finally, Sir, as I leave, I am reminded of the famous words of the cricketer Vijay Merchant. When Vijay Merchant retired, he was asked, "Why are you retiring; why are you going"? And Vijay Merchant said, "It is better to go when people ask why is he going rather than why isn't he going." Thank you, Mr. Chairman, Sir.

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री; तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मुख्तार अब्बास नक़वी): सभापति महोदय, जिन माननीय सदस्यों का कार्यकाल पूरा हो रहा है, मैं उनको संसदीय कार्य मंत्री, श्री वेंकैया नायडु जी की तरफ से और अपनी तरफ से शुभकामनाएँ देता हूँ कि जिन सैद्धांतिक प्रतिबद्धताओं के साथ वे काम करते रहे हैं, वे आगे जीवन में और मजबूती के साथ काम करते रहें और देश के विकास के लिए, देश के गरीबों के लिए, कमजोर तबकों के लिए उनका जो संकल्प है, वह और मजबूती से पूरा हो।

सभापति महोदय, अभी विजयलक्ष्मी जी ने भूले बिसरे गीत, सदाबहार गीत का ज़िक्र किया, तो मैं संसदीय कार्य राज्य मंत्री के नाते उन माननीय सदस्यों को, जिनका कार्यकाल पूरा हो रहा है, एक ऐसे ही सदाबहार गीत के साथ धन्यवाद देना चाहता हूँ। मोहम्मद रफी साहब का एक बहुत अच्छा और बहुत ही सदाबहार गीत है। ...(**व्यवधान**)... तरन्नुम के लिए तो सबको गाना पड़ेगा।

"एहसान मेरे दिल पे तुम्हारा है दोस्तो,
ये दिल तुम्हारे प्यार का मारा है दोस्तो।
बनता है मेरा काम तुम्हारे ही काम से,
होता है मेरा नाम तुम्हारे ही नाम से।
तुम जैसे मेहरबाँ का सहारा है दोस्तो,
ये दिल तुम्हारे प्यार का मारा है दोस्तो।
यारों ने मेरे वास्ते क्या कुछ नहीं किया,
सौ बार शुक्रिया, अरे, सौ बार शुक्रिया।"

बहुत-बहुत धन्यवाद।

सभा के नेता (श्री अरुण जेटली): माननीय सभापति जी, आज 53 सदस्य ऐसे हैं, जो आने वाले सप्ताहों में इस सदन से रिटायर होंगे और जिनका आज सदन में अंतिम दिन है। उनमें बहुत से वरिष्ठ लोग हैं, छः मंत्री भी हैं और स्वाभाविक भी है कि जो प्रमुख लोग होते हैं, जैसा शरद जी ने कहा, वे किसी न किसी सदन में वापस आ ही जाते हैं, क्योंकि राजनीतिक जीवन में रिटायरमेंट की प्रक्रिया तो होती ही नहीं, वे लोग केवल सदन की सदस्यता से रिटायर होते हैं। जो लोग वापस नहीं आ पाएंगे, वे राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्रों में काम करते रहेंगे और किसी न किसी प्रकार से अपना पूरा योगदान देते रहेंगे।

इस कार्यकाल में कुछ लोग छः वर्षों के लिए रहे और कुछ लोग बहुत अधिक वर्षों के लिए रहे। इनमें से बहुत सारे सदस्य ऐसे हैं, जो हम लोगों के पुराने साथी हैं। शायद बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि आज से कई साल पहले, जब मैं स्कूल में पढ़ता था, तो पवन वर्मा जी और मैं एक ही क्लास में साथ-साथ बैठा करते थे, इसलिए हम लोगों का बहुत पुराना रिश्ता है। त्यागी जी भी शायद 40-50 वर्षों से हम लोगों के मित्र हैं। हम लोग आंदोलन में इकट्ठे रहे। हालांकि इनका कार्यकाल बहुत छोटा रहा, किन्तु प्रभावी रहा, लेकिन ये आए थे हमारे साथी बनकर और जा रहे हैं हमारे विरोधी बनकर।

अन्य साथियों में, शरद जी के साथ अपने अनुभव को मैं बताना चाहूंगा। जब मैंने पहली बार शरद

जी को देखा, तो शरद जी इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़कर हटे ही थे। उन दिनों पहली बार उस वक्त का विपक्ष इकट्ठा हो रहा था और जबलपुर का उपचुनाव था। शरद जी पहले जनता उम्मीदवार के रूप में लोक सभा का चुनाव लड़े थे और उस चुनाव को जीते। इनके जीतने के तुरंत बाद श्री जयप्रकाश नारायण जी के नेतृत्व में संसद का एक मार्च था, तो शायद तुरन्त दो या तीन दिन बाद शरद जी दिल्ली आए और उस वक्त इनको बड़े हीरो जैसा स्वागत मिला था। बाद में जनता पार्टी बनी और उसकी सरकार बनी, तो उसके पहले उम्मीदवार आप ही थे।

कई मित्र ऐसे हैं, जिनसे संसद के दौरान ही हम लोगों का परिचय हुआ, उनमें से जयराम रमेश जी भी एक हैं, जिनसे मेरा प्रेम बहुत पुराना है। सदन में आने से पहले एक-दूसरे पर मुस्कुराते रहना और आज चूंकि इनका अंतिम दिन है, लेकिन मैं हमेशा यह उम्मीद रखूंगा कि उनके जैसी क्षमता का व्यक्ति दोबारा आए, वे दोबारा वापस आएं। मुझे केवल अंतिम बार उनको करेक्ट करना है कि वह बात सुनील गावस्कर ने कही थी, विजय मरचेंट ने नहीं। ...(**व्यवधान**)... इसका कॉंटेक्स्ट यह था कि उन दिनों एक चीज़ पर बड़ी बहस चल रही थी, जैसे जब पंडित नेहरू प्रधान मंत्री थे, तो उनके अंतिम दिनों में एक चर्चा चलती थी, "After Nehru, Who? पंडित जी चले जाएंगे, उनके बाद कौन? So, when Gavaskar was about to retire, उस समय उन्होंने एक बहुत अच्छी innings खेली थी और अचानक बाहर आकर उन्होंने एक सरप्राइज़ दिया, जिसमें अपनी रिटायरमेंट एनाउंस की। जब लोगों ने कहा कि आज तो आप इतना अच्छा खेले हैं, तो रिटायर क्यों हो रहे हैं, तो उन्होने जवाब दिया, "You must retire when people say 'why' and not 'why not'." मुझे लगता है कि आपको भी अभी बहुत लम्बी पारी खेलनी है। आपका बहुत evolution होगा। I knew you when you were an economic liberal, and I have seen your transformation to an economic conservative, and, I think, whatever be your viewpoint. ...*(Interruptions)*...

SHRI TAPAN KUMAR SEN: Maybe, he is learning from experience.

SHRI ARUN JAITELY: The country, probably, and his party certainly, needs him and I am sure, they will put his services to the best use.

सभापति जी, माननीय सदस्यों ने काफी विषय उठाए। मैं यहां केवल तीन-चार चीज़ें कहना चाहूंगा, जो हम सबका अनुभव है। आनन्द शर्मा जी ने ठीक कहा कि हम डिस्टर्बेंस भी करते हैं, लेकिन काम भी करते हैं। मैं तो कई बार हंसी में, विनोद में कहता था कि कांग्रेस के कुछ सदस्यें के साथ मेरा फिज़िकल नाता बहुत नज़दीकी का है, क्योंकि सीलम जी और उनके साथियों ने मेरी सीट के साथ बहुत समय बिताया है। इसलिए मैं सीलम साहब के साथ मज़ाक किया करता था, 'Is he retiring from the Well of the House because he has spent a lot of time in the Well itself?' But at the end of the day, it always helps to debate because we converge. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please don't disrupt the Leader of the House. ...*(Interruptions)*... Please sit down.

श्री अरुण जेटली: अन्त में केवल बहस के माध्यम से ही हल निकलते हैं। उसका सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि इस सत्र में भी जब बाहर चर्चा होती रही कि 'डिस्टर्बेंस है, डिस्टर्बेंस है..', बजट सेशन के पहले भाग और दूसरे भाग में हम लोगों ने 24 कानून पारित किए। उनमें से कई कानून तो ऐसे हैं, जो पूरे देश के लिए बहुत महत्व रखते हैं, क्योंकि जब हम लोग काम करते हैं, तो काम करते-करते संघर्ष भी राजनीति में होता है, लेकिन देश का हित भी सामने आता है।

मुझे याद है कि जब मैं पहली बार संसद में आया था, उस वक्त के हमारे नेता अटल जी और आडवाणी जी थे। मैं यह किस्सा पहले भी सुना चुका हूँ कि उन्होंने मुझे एक सलाह दी थी। उन्होंने कहा था कि जब भी संसद में बोलो, 'concentrate on issues and not on persons' और शायद उस प्रभाव में आप अपनी बात ज्यादा कह पाओगे। हमसे कई बार गलती होती है, लेकिन मुझे आज भी उस सुझाव में बहुत गम्भीरता और वजन लगता है।

राज्य सभा का एक बहुत बड़ा महत्व है। प्रोफेसर साहब ने भी ठीक कहा कि कई बार राज्य सभा में जिस प्रकार के लोग आते हैं, वे गम्भीरता से सोचते हैं और कई बार लोक सभा को भी मजबूर करते हैं कि वह एक बार पुनः विचार करे। यह हमारे देश में ही नहीं है, पूरे विश्व में दो सदनों के बीच में आपस की बहस चलती है। आस्ट्रेलिया में दोनो हाउसेज़ का जो double-dissolution हुआ है, जिनका 2 जुलाई को चुनाव है, उसके पीछे दोनों हाउसेज़ की तकरार है कि एक कानून एक ने बनाया, दूसरे ने पारित करने से इनकार कर दिया। इंग्लैंड में ही 1885 से बहस चल रही है, इटली में आज भी यह बहस चल रही है और वे इंग्लैंड के पैटर्न पर एक हल ढूँढ रहे हैं कि दोनों का conciliation कैसे हो। मुझे लगता है कि राजनीति की यह maturity है कि वह अपने आप इसमें से एक हल ढूँढेगी।

मुझे अन्तिम विषय यह कहना है, जो प्रोफेसर साहब ने उठाया, कि law-making में इस सदन की जो primacy है और लोक सभा की जो primacy है, तो law-making और budget-making, ये दो ऐसे विषय हैं कि कोई तीसरा तय नहीं कर सकता और इसकी गम्भीरता समाज की हर संस्था को सोचनी पड़ेगी। अगर law-making और budget-making का अधिकार यहाँ से निकल जाता है, तो संसदीय लोकतंत्र और उसके साथ-साथ पूरा लोकतंत्र अपने आप में कमज़ोर होता है। मैं विश्वास रखता हूँ कि हमारे यहाँ institutions की जो maturity है, कभी न कभी इस तर्क को, जो संविधान बनाने वालों के सामने था, उसको मद्देनज़र रख कर आगे का रास्ता वे लोग तय करेंगे।

जो लोग आज इस सदन की सदस्यता से रिटायर हो रहे हैं, उन सबको मैं अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ, उनकी लम्बी आयु और अच्छे स्वास्थ्य की प्रार्थना करता हूँ कि वे अपने राजनैतिक दलों की और देश की किसी न किसी capacity में आगे सेवा करते रहें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Thank you very much, Arun Jaitley ji. 'अब जिगर थाम के बैठो, मेरी बारी आई।' Hon. Members...

SHRI JAIRAM RAMESH: Three minutes.